राष्ट्र जागरण का शंखनाद

# शाश्वत हिन्दू गर्जना

वर्ष : 30 माह : मई 2023 सहयोग : ₹ 10

## सेवा की आड़ में

# षड्यंत्र और शोषण

## आखिर कब तक ?

(6) श्रीराम नवमी मनाना भी अपराध...?
(7) एक में सब, सब में एक
(8) गर्मी में बचकर रहें हीट स्ट्रोक से
(9) गोबर की ईंटों का वैदिक घर

शाश्वत हिन्दू गर्जना

आज़ मैंने शाश्वत हिंदू गर्जनामाह मार्च –अप्रैल 2023 को पढ़ा, पढ़कर मुझे बहुत अच्छा अनुभव हुआ । दिखने वाली यह छोटी मासिक पुस्तिका बहुत ज्ञानवर्धक है इसमें हमारी संस्कृति, शिक्षा इतिहास व अलग–अलग समय पर महापुरुषों द्वारा समाज व राष्ट्र हित में किये गये कार्यों का वर्णन है। जैसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, छत्रपति शिवाजी महाराज, बाबासाहेब आंबेडकर, महावीर स्वामी, दयानंद सरस्वती, ज्योतिराव फुले आदि अनेक महापुरुषों का लेख तथा राष्ट्र विरोधी गतिविधियों पर नजर डाली गई है। महिला सशक्तिकरण पर मध्यप्रदेश सरकार का लाडली बहना योजना लागू करना सराहनीय है। आदि अनेक बिंदुओं पर प्रकाश डालने का कार्य शाश्वत हिंदू गर्जना ने किया है । मुझे पढ़कर बहुत सी जानकारी प्राप्त हुई मैं आभार व्यक्त करती हूँ और अधिक से अधिक लोगों तक अच्छा संदेश जाये इसके लिए प्रयासरत रहूंगी। बहुत– बहुत धन्यवाद आभार।

**प्रणीता साकरे** समाज सेवी– चंदना, परसवाड़ा जिला बालाघाट

शाश्वत हिंदू गर्जना बुक लिखने वाले महान व्यक्ति के चरणों में सादर नमन।
समरसता के अग्रदूत डॉ. भीमराव आंबेडकर जी के बारे में विचार करते हुए बहुत अच्छी बात लिखी है। हम आप सभी से हाथ जोड़कर निवेदन करते हैं कि पहले आप डॉ. आंबेडकर जी के पेज को पढ़ें फिर कमेंट जरूर करें।

**प्रमोद अहिरवार** – रूरावन, शाहगढ़, जिला– सागर

शाश्वत हिन्दू गर्जना पुस्तक पढ़कर मुझे बहुत अच्छा लगा। समरस समाज के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले 19 वीं सदी के महान समाज सुधारक, विचारक, दार्शनिक व लेखक थे । उन्होंने भारतीय समाज में फैली अनेक कुरीतियों को दूर कर हिन्दू समाज में समरसता लाने का प्रयास किया। अत: मुझे ज्योतिबा फुले के जीवनी के बारे में पढ़कर बहुत अच्छा लगा। धन्यवाद।

**श्री निवास पाल** - ग्राम पोस्ट बाबूपुर,जिला सतना ( म.प्र.)

शाश्वत हिंदू गर्जना पत्रिका में मर्मस्पर्शी एवं हृदयग्राही छोटी सी कहानी को पढ़कर मुझे अच्छा लगा। इसमें छोटी बच्ची के द्वारा भिक्षा देने के माध्यम से संस्कार के बारे में बताया गया है। दान हमेशा अपने परिवार के छोटे बच्चों के हाथों से दिलवाना चाहिए जिससे उन्हें देने की भावना बचपन से ही बनी रहे।

**सुरेंद्र सिंह**- ग्राम पोस्ट करही कलां, उचेहरा जिला मैहर

पहली बार ऐसी पत्रिका हमें प्राप्त हुई । हमारे गांव में कोई अखबार भी नहीं आता है। मैं बैगा बाहुल्य गांव की रहने वाली हूँ। पत्रिका में इस माह के तीज त्यौहार की जानकारी की जानकारी प्राप्त हुई। पत्रिका में छपे सभी लेख और चित्र प्रेरणा देने वाले हैं।

**गीता धुर्वे** ग्राम–पटपरा (अमवार), मवई जिला– मंडला

# नारद पत्रकारिता पुरस्कार 2023

## समग्र पत्रकारिता जीवन पर आधारित

पत्रकारों को प्रदान किये जाने वाले इस पुरस्कार हेतु पत्रकार जगत से प्रविष्टि आमंत्रित है।

**देवर्षि नारद प्रिंट मीडिया पत्रकारिता पुरस्कार**
राशि प्रथम 7100/– द्वितीय 3100/– तृतीय 2100/–

**देवर्षि नारद इलेक्ट्रॉनिक प्रिंट मीडिया पत्रकारिता पुरस्कार**
राशि प्रथम 7100/– द्वितीय 3100/– तृतीय 2100/–

**प्रेस छायाकार पुरस्कार**
राशि प्रथम 3100/– द्वितीय 2100/– तृतीय 1100/–

**इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कैमरामैन पुरस्कार**
राशि प्रथम 3100/– द्वितीय 2100/– तृतीय 1100/–

### अर्हताएं

1. आवेदनकर्ता का स्वविवरण (बायोडाटा)
2. प्रेषित रिपोर्ट प्रकाशन/प्रसारण कालावधि 1 अप्रैल 2022 से 31 मार्च 2023
3. प्रेषित रिपोर्ट का ब्यूरो प्रमुख द्वारा सत्यापन प्रमाण पत्र संलग्न करें।

### पुरस्कार चयन के आधार :–

1. विषय चयन 2. विषय वस्तु तत्व (कंटेंट) 3. प्रस्तुतिकरण
4. सामाजिक एवं राष्ट्रीय उपादेयता 5. प्रभाव एवं परिणाम प्रविष्ट हेतु अंतिम तिथि 07 मई 2023

प्रविष्ट इस ईमेल पर भेजें – vskjbp@gmail-com

**विश्व संवाद केन्द्र महाकौशल, जबलपुर**
संपर्क सूत्र – भूपेन्द्र कटरे 7898946667

Website : www-vishwasamvadkendra-com
Email : vskjbp@gmail-com

शाश्वत हिन्दू गर्जना

**महाकौशल प्रांत**
वर्ष 30 अंक – 04
मई –2023
विक्रमाब्द् – 2080
युगाब्द – 5125

✤

**संपादक**
डॉ. किशन कछवाहा

✤

**सह–संपादक**
डॉ. नुपूर निखिल देशकर

✤

**सलाहकार संपादक**
डॉ. यतीश जैन
चंद्रशेखर पचौरी

✤

**प्रकाशक**
नरेन्द्र जैन
विश्व संवाद केन्द्र
महाकौशल न्यास, जबलपुर

✤

**सम्पर्क**
प्लॉट नं.1, म.नं. 1692
नव आदर्श कॉलोनी,
गढ़ा मार्ग, जबलपुर
फोन–0761–4006608

✤

**मुद्रक**
ग्रेनेडियर्स प्रिंटिंग प्रेस
जबलपुर
फोन–0761–2620184

संपादकीय

# हमारी भारतीय संस्कृति

सन् 1947 में आजादी मिलने के बाद के एक बड़े कालखंड में देश की जनता को इस वास्तविकता से अवगत नहीं होने दिया गया कि बाबर, अकबर, औरंगजेब जैसे विदेशी लुटेरों ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को कितना नुकसान पहुंचाया। इतना ही नहीं ये सनातन सभ्यता के सबसे बड़े दुश्मन और बर्बरता के उदाहरण थे। इन्हें तत्कालीन जयचंदों ने जो शासन के पिट्ठू थे, इन्हें नायक बताकर शिक्षा के क्षेत्रों में उनकी यशगाथा के साथ परोसा गया और इसके विपरीत महाराणा प्रताप, बंदा, बैरागी और वीर सावरकर जैसे मातृभूमि के सशक्त भक्तों को शिक्षा और समाज की देहली से लुप्त करने–कराने का दुष्पाप किया। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि नयी पीढ़ी को इन महान भारत माता के सर्वस्व अर्पण कर देने वाले महावीरों से प्रेरणा लेने का अवसर ही नहीं मिल सका।

आज भी हिन्दुत्व को बदनाम करने की गहरी साजिशें चल रहीं हैं तथा सनातन पर आक्षेप उठाते हुये कतिपय अन्य विचारधारा के लोग हिन्दुओं को हिंसक और असहिष्णु कहने से भी नहीं चूक रहे। भारत में ही नहीं, भारत के बाहर जाकर भी सनातन धर्म, भारतीय चिन्तर और दर्शन पर आक्रमण किये जाते हैं। जबकि इस देश की विविधता में एकता उसकी बड़ी उपलब्धि है।

भारत हजारों–लाखों वर्ष पुराना राष्ट्र है और पुरातन शाश्वत नियमों का एक से दूसरी पीढ़ी में स्थानान्तर स्वाभाविक रूप से होता चला आया है। सनातन धर्म में आकण्ड डूबा यह समाज एक दूसरे को समर्पण का ही संदेश देता है। विभिन्न प्रयासों–कार्यक्रमों के माध्यम से समाज को जोड़ने का अतिपावन कार्य होता चला आ रहा है।

भारत में सौ से अधिक मजहब हैं और इतनी ही भाषायें हैं। फिर भी भारत में लोग शान्ति–सद्भाव से रहते हैं। खलफ अल हरबी सऊदी के विख्यात विद्वान व लेखक हैं, उन्होंने इन सब बातों के संदर्भ में भारत की प्रशंसा भी की है। उन्होंने यह भी कहा है कि सहिष्णुता और सह–अस्तित्व का पाठ भारत से सीखा जा सकता है।

**डॉ. किशन कछवाहा**
सम्पादक– शाश्वत हिन्दू गर्जना

**सुभाषितम्**

**कोटि–कोटि जन्म अन्तरे जाहार**
**आछे महा पुण्यराशि।**
**सि सि कदाचित् मनुष्य होवय**
**भारत बरिषे आसि।।**
**श्रीमन्त शंकरदेव भागवत**

**अर्थ–कोटि–कोटि जन्मों के बाद जिनका पुण्य संचित होता है,**
**वो भी कदाचित् मनुष्य के रूप में भारत में जन्म लेता है।**

# सेवा की आड़ में षड्यंत्र और शोषण आखिर कब तक?

डॉ. आनंद सिंह राणा

वसुधैव कुटुम्बकम् के आलोक में धार्मिक सहिष्णुता का गुण धर्म सनातन धर्म के मूल में है, परंतु ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में इसकी अतिशयता अत्याधिक घातक सिद्ध हुई है। भारतवर्ष लंबे अर्से से सेवा की आड़ में मंतातरण, अत्याचार, अनाचार और विभिन्न प्रकार से शोषण का ईसाई मिशनरियों का केंद्र बिंदु बना हुआ है। मिशनरियों के दुष्कर्म और आतंक गोवा से प्रारंभ हुआ ।

बरतानिया सरकार ने सन् 1813 के चार्टर एक्ट से ईसाई मिशनरियों को प्रवेश के साथ भारत में हर प्रकार की छूट दे दी। तदुपरांत भारत में ईसाई मिशनरियों का मकड़जाल फलने–फूलने लगा। भारत में मंतातरण कराने वाली ईसाई मिशनरी योजनाबद्ध तरीके से सनातन धर्म और भारत की जड़ों को काटने का कार्य प्रारंभ किया।

प्रकारांतर से वंचितों और दलितों को पृथक परिभाषित कर हिन्दू धर्म में दरार पैदा की गई। ईसाई मिशनरियों द्वारा पृथक पृथक रास्तों से पृथक – पृथक तरीकों से हिंदुओं का तथाकथित धर्मातरण कराया गया। कभी बलपूर्वक, छलपूर्वक तो कभी सेवा, स्वास्थ्य, शिक्षा नौकरी, चंगाई सभा और समानता की आड़ में मंतातरण कराया ।

### सेवा और शिक्षा की आड़ में यौन शोषण और मंतातरण

महाकौशल भारत का हृदय स्थल है, यहाँ की जनजातीय संस्कृति हिंदुत्व की धड़कन है। इसलिए ईसाई मिशनरियों ने महाकौशल में मुख्य रुप से जनजातियों को अपना निशाना बनाया है। ईसाईयत के अनुसार गॉड (ईश्वर) का पहला बेटा स्वर्ग दूत लूसीफर ही शैतान बन गया था वह वेरियर एल्विन के रुप में डिंडौरी पहुँचा। वेरियर एल्विन ने 13 वर्षीय बैगा बालिका कौशी बाई के साथ बाल विवाह कर उसका सर्वनाश कर दिया। रक्त बीज वेरियर एल्विन ने डिंडौरी में यौन शोषण और मंतातरण के विषैले बीज बोए। ये बीज फट रहे हैं और महाकौशल सहित संपूर्ण भारत में सैकड़ों कौशी देवी शिकार हो रही हैं। जिसका भयावह रुप मार्च 2023 में डिंडौरी के जुनवानी मिशनरी स्कूल में देखने को मिला। यहाँ 8 नाबालिग जनजातीय बालिकाओं का यौन शोषण शिक्षक खेमचंद बिरको और पादरी सनी फादर ने किया जिसमें वार्डन सविता एक्का सहयोगी रही। पहले मामले को दबाने का प्रयास किया गया परंतु नई दुनिया समाचार पत्र मुखर हुआ और मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने तत्परता के साथ सख्त कार्रवाई की। फलस्वरुप पाक्सो एक्ट सहित अन्य धाराओं में आपराधिक प्रकरण दर्ज हुए। सन् 1937 से स्थापित इस स्कूल में सेवा और शिक्षा की आड़ में बदस्तूर यौन शोषण, मंतातरण जारी रहा। विदेशी फंडिंग के साथ राज्य से भी अनुदान मिलता रहा।अति तो तब हुई जब बिशप ने कहा कि म. प्र. को कैथोलिक स्टेट बनाना है। म. प्र सरकार ने नकेल डाल दी है और मिशनरियों का यह कहना बंद हो गया है कि सरकार कोई भी हो सिस्टम तो हमारा है। बिशप और पादरियों द्वारा यौन उत्पीड़न की कहानी सिस्टर लूसी कलाप्पुरा की आत्मकथा 'कार्तावित्ते नामाथिल' (ईश्वर के नाम पर) में भी पढ़ी जा सकती है। इसे पढ़कर स्पष्ट होता है कि यौन शोषण और उत्पीड़न चर्च के लिए कोई नया शब्द नहीं है।

### जबलपुर का कुख्यात पूर्व बिशप पी. सी. सिंह

जबलपुर में निवासरत् भारत का सर्वाधिक कुख्यात पूर्व बिशप पी. सी. सिंह के पद में रहते हुए देश भर में 99 आपराधिक मामले दर्ज हुए हैं , फिर भी बिशप पीसी सिंह जमानत पर रिहा हैं। दोनों के डॉन पी सी सिंह पर ज्यादातर मामले अमानत में ख्यानत के हैं। इनमें छेड़छाड़, अवैध वसूली, फजह्न दस्तावेज बनाने सहित अन्य प्रकरण भी शामिल हैं। यह भी आरोप लगाए गए थे कि बिशप पीसी सिंह ने अपने सहयोगी पीटर बलदेव से मिलीभगत कर मिर्जापुर (उप्र) में 10 करोड़ रपये कीमत की जमीन बेच दी थी।

### इन प्रदेशों में दर्ज हैं मामले

दिल्ली में तीन, उत्तर प्रदेश में 42, राजस्थान में 24, झारखंड में तीन, मध्य प्रदेश में चार, छत्तीसगढ़ में तीन, महाराष्ट्र में 11, पंजाब में छह, पश्चिम बंगाल में एक, हरियाणा में एक सहित अन्य एक मिलाकर कुल 99 आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं। उल्लेखनीय है कि ई.ओ.डब्लयू. जबलपुर की टीम ने आठ सितंबर, 2022 को पूर्व बिशप पीसी सिंह के नेपियर टाउन स्थित कार्यालय व घर पर दबिश दी थी। दबिश के दौरान 80 लाख का सोना, एक करोड़ 65 लाख रुपये नकद, 48 बैंक खाते, 18352 यूएस डालर, 118 पांउड, नौ लग्जरी गाडियां, 17 संपत्तियों के दस्तावेज मिले थे। दबिश के दौरान पूर्व बिशप देश के बाहर था। ई. ओ.डब्ल्यू. ने उसे नागपुर एयरपोर्ट से 12 सितंबर को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया था। था। ई.ओ.डब्लयू. ने पूछताछ के लिए पूर्व बिशप को चार दिन के रिमांड पर लिया था। रिमांड के दौरान उसने 10 एफडी सहित 174 बैंक खातों की जानकारी दी थी। आरोप है कि पूर्व बिशप ने मिशन कंपाउंड स्थित बेशकीमती जमीन खुद के नाम आधे दामों में खरीदी थी। आरोप है कि पीसी सिंह ने बिशप रहते हुए जमीन बेची और क्रेता के तौर पर स्वंय खरीद ली। उसके विरुद्ध देशभर के अलग–अलग राज्यों में 80 मामले दर्ज है। आरोपित ने बिना अनुमति फजह्न तरीके से संस्था का रजिस्ट्रेशन कराया था। विशप व उनके परिवार के सदस्यों के नाम पर बैंक में साढ़े छह करोड़ रूपये पाये गये थे। संस्था के स्कूलों के नाम पर खुद के लिए वाहन खरीदे, बैंक खाते से छह करोड रूपये ट्रांसफर करने, नियम विरुद्ध तरीके से पत्नि व बेटे की नियुक्ति सहित अन्य लगे हैं। अब ईडी ने छापा मारा है,जैकब भी घेरे में आ गए हैं। दोनों के इंग्लैंड से फंडिंग संबंधों का खुलासा हुआ है। वहीं दूसरी ओर जबलपुर में ईसाई मिशनरीज की एक और करतूत सामने आई है। मेथोडिस्ट चर्च आफ इंडिया के नाम पर 6 एकड़ रिहायशी इलाके में निवासार्थ दी गई थी। फादर मनीष गिडियन सहित अन्य ने इस जमीन को खुर्द–बुर्द कर आवासीय भूमि के पट्टे की आड़ में होटल, हास्पिटल व दुकानों को विकसित कर, दुरुपयोग किया। यह कितना शर्मनाक और चार सौ बीसी है। अरबों रुपये की संपत्ति का दुरुपयोग है।

**दमोह में लालच देकर कन्वर्जन**

दमोह में पुलिस ने ईसाई मतांतरण का एक बड़ा षड्यंत्र विफल किया है । जांच में यह जानकारी भी सामने आई है कि दमोह के 'यीशु भवन' में क्रिसमस के समय 500 लोगों का मतांतरण कराने की योजना बनाई गई थी, हालांकि अब इससे जुड़े सभी लोग गिरफ्तार भी किए जा चुके हैं। दमोह जिला के यीशु भवन को इन ईसाई मिशनरी समूह ने अवैध मतांतरण का 'अड्डा' बना रखा था, जिसमें प्रमुख रूप से केरल की ईसाई संस्था सम्मिलित थी, इस संस्था से जुड़े 8 लोगों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की गई थी और 2 लोगों को गिरफ्तार भी किया जा चुका है।

मतांतरण के इस 'अवैध अड्डे' में ईसाई मिशनरी हिंदु महिलाओं को पानी में डुबकी लगवाते है। उनका बपतिस्मा करने की प्रक्रिया के नाम पर उनके सिंदूर–बिंदी, चूड़ी और मंगलसूत्र निकलवाया जाता है एवं अंततः घर में स्थापित देवी–देवताओं के फोटो को पानी में विसर्जित करवाया जाता है। उन्हें पैसे और अन्य सुविधाओं का लालच दे कर ईसाई बनाया जाता था। यह लोग क्रिसमस पर 500 से ज्यादा हिन्दुओं का मतांतरण करने का षड्यंत्र रच रहे थे,जिसे निश्फल कर दिया गया।

**सागर के बीना में क्रिश्चन स्कूल का कारनामा**

सागर जिले में एक मिशनरी स्कूल की जीव विज्ञान प्रयोगशाला में मानव भ्रूण मिलने से भयावह स्थिति बन गई। शिकायत मिलने के बाद राज्य बाल आयोग जांच करने स्कूल पहुंचा। प्रकरण जिले के बीना में स्थित मिशनरी हायर सेकंडरी स्कूल निर्मल ज्योति का है। राज्य बाल संरक्षण आयोग की दो सदस्यीय टीम बीना पहुंची। टीम में सम्मिलित आयोग सदस्य ओंकार सिंह व डॉ. निवेदिता शर्मा ने स्कूल का निरीक्षण किया। जहां पर स्कूल की जीव विज्ञान प्रयोगशाला में एक भ्रूण मिला। भ्रूण कहां से और कब लैब में आया इसको लेकर स्कूल प्रबंधन कोई जवाब नहीं दे पाया । मौके पर मौजूद प्राचार्या सिस्टर ग्रेस का कहना था कि वह कुछ समय पहले ही यहां पदस्थ हुई हैं, पूर्व में कोई लाया होगा, लेकिन इसकी जानकारी नहीं है। मानव भ्रूण को लेकर पहले तो प्लास्टिक का होने की बात की गई। लेकिन जब आयोग सदस्य डॉ. निवेदिता शर्मा ने पूछा कि इसे प्रिजर्व करके क्यों रखा गया है ? प्लास्टिक का है तो बाकी जीवों की तरह इसे भी बाहर रखो, तो प्रबंधन कोई जवाब नहीं दे सका। आयोग सदस्यों ने भ्रूण को जब्त कर मौके पर मौजूद पुलिस को जांच कराने के लिए सौंपा है। फोरेंसिक जाँच में मानव भ्रूण होने की पुष्टि हुई है। वहीं शिकायतकर्ता छात्र के बयान लेने के बाद आयोग सदस्य ने बीआरसी को स्कूल प्रबंधन के खिलाफ धर्म विशेष की प्रार्थना कराने के आरोप में एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए हैं। स्कूल प्रबंधन ने 178 बच्चों की फीस में छूट बताई, जबकि फाइल में 1 नाम मिला। स्कूल के आय–व्यय, मान्यताओं, गतिविधियों, फीस स्ट्रक्चर, स्टाफ सहित एक–एक दस्तावेज की जांच की। इस दौरान सदस्यों ने पाया कि स्कूल में पदस्थ शिक्षकों और बस चालकों का पुलिस वेरिफिकेशन ही नहीं कराया गया है। स्कूल आरटीई के दायरे में नहीं आता है। प्रबंधन ने कहा हमने 178 आर्थिक कमजोर बच्चों को फीस में छूट दी जिसकी राशि करीब 16 लाख है, लेकिन जब आयोग ने फाइल देखी तो उसमें विद्यार्थियों की तरफ से एक आवेदन बस लगा मिला। वह अमीर हैं या गरीब इसके कोई प्रमाण संस्था के पास नहीं मिले।

**सेंट जोसेफ स्कूल का फादर जीबी सेबेस्टियन फरार**

मिशनरियों के यही हाल मंडला जिले में हैं। मंडला जिले के मवई थानांतर्गत घोरेघाट ग्राम पंचायत में संचालित सेंट जोसेफ स्कूल का फादर जीबी सेबेस्टियन फरार है। उससे संबंधित सभी दस्तावेज भी स्कूल से गायब है। बाल अधिकार संरक्षण आयोग की टीम की दबिश के बाद कोई अन्य टीम आई थी, जो फादर से संबंधित फाइल लेकर चली गई। फादर के आवासीय कक्ष में ताला लगा हुआ है और मोबाइल बंद है।

राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग के सदस्यों ने चार मार्च को मिशन स्कूल में दबिश दी। आठ मार्च को बाल कल्याण समिति के सदस्य योगेश पाराशर ने मवई थाने में सेंट जोसेफ स्कूल के फादर और छात्रावास के अधीक्षक कुंवर सिंह के विरुद्ध मवई थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। फादर को गिरफ्तार करने की कवायद चल रही है। समूचे महाकौशल में ईसाई मिशनरियों ने इसी प्रकार मकड़जाल फैला रखा है परंतु म. प्र.सरकार का शिकंजा कसता जा रहा है और मिशनरियों का दम निकलता जा रहा है।

**डी–लिस्टिंग ब्रम्हास्त्र है**

ईसाई मिशनरीज और विदेशी अल्पसंख्यकों ने भारतीय संविधान में मिले अधिकारों का दुरुपयोग किया है और कर रहे हैं । अतः अब समय आ गया है कि इनके उन्मूलन के लिए चतुर्दिक घेराबंदी की जाए। देश के विभिन्न अंचलों में डी–लिस्टिंग की मांग जनजातीय समाज उठा रहा है । एक सशक्त जनमत इस मुद्दे पर आकार ले रहा है कि संविधान के अनुच्छेद 342 के अनुसार जो सरंक्षण और् आरक्षण हिन्दू जनजाति वर्ग को सुनिश्चित किया गया है उसका लाभ ईसाई और मुस्लिम विदेशी अल्पसंख्यक क्यों उठा रहे हैं ? एक अनुमान के अनुसार देश में जनजाति आरक्षण का लगभग 70 प्रतिशत लाभ मतांतरित हो चुके ईसाई या मुस्लिम लोग उठा रहे हैं।यह दोहरा लाभ उठा रहे हैं। इसलिए ईसाई मिशनरियों और विदेशी अल्पसंख्यकों के मकड़जाल को ध्वस्त करने के लिए डी–लिस्टिंग ब्रम्हास्त्र है और सर्जिकल स्ट्राइक भी। यद्यपि संविधान संशोधन आसान नहीं है परंतु हिन्दुओं की एकता एक विशाल जनमत तैयार कर संसद और विधान मंडलों को संविधान में संशोधन के लिए शक्ति प्रदान कर सकती है। डी–लिस्टिंग के साथ विदेशी मतावलंबियों को अल्पसंख्यक का दर्जा समाप्त करते ही ईसाई मिशनरीज और मुस्लिम मदरसों सहित अन्य विदेशी फंडिंग संस्थाओं की भी कमर टूट जाएगी। तब जाकर हिंदुत्व के आलोक में

एक भारत –
समरस भारत –
समर्थ भारत–श्रेष्ठ भारत
का अभ्युदय हो सकेगा।

# भारतीय परिवार अवधारणा के विरुद्ध षड्यंत्र- समलैंगिक विवाह

सनी राजपूत, अधिवक्ता

**विदेशों में चलने वाले उनके स्थानीय मापदंडो को भारत के संदर्भ में जबर्दस्ती लागू करवाने के कुंठित प्रयास लगातार हो रहे हैं। ऐसा ही एक अवैध प्रयास समलैंगिक विवाह के रूप मे सामने आता दिख रहा हैं। इसमे आश्चर्य की बात यह है कि भारत में एक ऐसा वर्ग है जो एसे सभी कुंठित प्रयासो को अमल मे लाने के लिए तैयार बैठा रहता हैं।**

भारतीय समाज की अंतिम इकाई परिवार को माना गया है। परिवार विहीन समाज की परिकल्पना भारतीय अवधारणा के विरुद्ध है। भारतीय संस्कृति और मान्यताओं के आधार पर परिवार में पति–पत्नी और उनकी संतानों को स्थान दिया गया है। यह परिवार की मूल इकाई है। उसके उपरांत परिवार के अन्य सदस्यों को भी परिवार का वृहद स्वरूप कहा गया है। परिवार में पति के रूप में पुरुष एवं पत्नी के रूप में स्त्री को मान्यता प्रदान की गयी है। इसी आधार पर भारतीय संविधान के अनुसार बने विशेष विवाह अधिनियम 1954 में भी पुरुष एवं स्त्री के आपस में विवाह की बात की गयी है। इसमें भी जैविक रूप से स्त्री–पुरुष को विवाह की सहमति दी गयी है। भारतीय संविधान के अनुसार भी परिवार की कल्पना उसी प्रकार से की गयी है। जिस प्रकार से भारतीय शास्त्रों और संस्कृति–परम्परा में बताया गया है। किंतु विदेशों में चलने वाले उनके स्थानीय मापदंडो को भारत के संदर्भ में ज़बरदस्ती लागू करवाने के कुंठित प्रयास लगातार हो रहे हैं। ऐसा ही एक अवैध प्रयास समलैंगिक विवाह के रूप मे सामने आता दिख रहा है। इसमें आश्चर्य की बात यह है कि भारत में एक ऐसा वर्ग है जो एसे सभी कुंठित प्रयासो को अमल मे लाने के लिए तैयार बैठा रहता है।

एक ओर जहाँ भारतीय समाज में विवाह के लिए गोत्र परंपरा का भी निर्वहन होता है, जिसमेंवर–वधू पक्ष के सात पीढ़ियों के गोत्र तक का मिलान करने के बाद एक पुरुष और स्त्री के विवाह की सहमति बनती है। जहां भारत में विवाह एक संस्कार के रूप में स्वीकार किया गया हैं। ऐसे भारतीय समाज मेंविदेशों के प्रभाव में आकर समलैंगिक विवाह को थोपने का अवैध प्रयास करना एक प्रकार की कुंठा को व्यक्त करने का तरीका लगता है। भारतीय समाज के भीतर परिवार संस्था ना केवल समाज को एक सूत्र में बांधने का काम करती है, बल्कि भारत की मूल संस्कृति,रीति–रिवाज और परम्पराओँ को भी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करने का काम करती है। परिवार संस्था के कारण ही भारत वर्तमान में भी अपने उसी मूल स्वरूप मे विद्यमान है,जैसा कि कई हजारो वर्षो पहले भी था। परिवार संस्था,भारतीय समाज की शक्ति और संगठन का स्त्रोत है। भारतीय संस्कृति और परंपरा में ऐसे अनेक काम हैं, जिन्हेंकेवल परिवार में महिलाओँ के द्वारा ही पूरा किया जा सकता है। भारतीय परिवार में महिला केवल चूल्हे–चौके तक ही सीमित नहीं होती है। परिवार में होने वाले वैदिक और धार्मिक अनुष्ठान एवं पूजा पद्धति में महिलाओँ की प्रमुख भूमिका होती है। भारतीय परिवार में सदस्यो के कर्तव्यो का वगह्नकरण बेहतर प्रकार से किया गया है। जिस प्रकार अन्य मजहबों और रिलिजनों में विवाह एक समझौता है या फिर विवाह केवल भोग का एक साधन है,उसके विपरीत भारत में विवाह के अनेक आयाम हैं। इसे ऐसे भी समझा जा सकता है कि भारतीय विवाह परंपरा में विवाह के बाद विच्छेद का कहीं कोई उल्लेख नहीं है। तलाक और डिवोर्स,दोनों ही शब्द गैर भारतीय हैं।

भारतीय समाज पर न्यायालय के माध्यम से पीछे के दरवाजे से समलैंगिक विवाह जैसे विदेशी प्रभाव से ग्रसित चलन को भारत में कानूनी मान्यता का सभी को विरोध करने की आवश्यकता है। समलैंगिक विवाह के द्वारा भारतीय समाज में व्याप्त परिवार व्यवस्था को समाप्त करने षड्यंत्र को असफल करना आवश्यक है। जिसके विरुद्ध समाज के सभी वर्गो को आवाज उठाने के लिए आगे आने की जरूरत है।

# बुन्देलखण्ड के महान योद्धा महाराजा छत्रसाल

**डॉ. किशन कछवाहा**

मध्यप्रदेश की पावन धरा पर जन्म लेने वाले एक महानायक का नाम जन–जन में अत्यन्त आदर के साथ, सम्मान के साथ वीरता की प्रतिमूर्ति के रूप में आज भी लिया जाता है। वह नाम है ''महावीर छत्रसाल''। इनकी यही विशेषता रही है कि इनका जन्म न तो किसी राजपरिवार में हुआ, न ही राजशाही जैसी सुविधायें उपलब्ध हो सकी थी। शून्य से उपजी गहन–गम्भीर परिस्थितियों ने उन्हें महायोद्धा बना दिया। इस बुंदेला सरदार ने बचपन से ही अपने तित्व और अदम्य साहस से आततायियों को रौंद डालने के लिये संघर्ष का बिगुल फूँक दिया था। इस महायोद्धा की प्रतिभा, ओजस्वी वाणी, कवित्व वाला चमत्कारिक व्यक्तित्व, साहस से प्रभावित होकर हजारों की संख्या में युवक हाथों में नंगी तलवार लेकर आते चले गये, जिससे बुंदेलखण्ड की भूमि के बाहर मालवा, बघेलखण्ड, पंजाब व राजस्थान तक अलख जगाने का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य आगे बढ़ता चला गया। विदेशी मुगल आततायियों के अत्याचारों के खिलाफ एक नया इतिहास रचा गया। उस इतिहास की यश गाथायें आज भी स्थान–स्थान पर सुनी जाती हैं। इस असामान्य

महामानव का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल 3 संवत् 1706 सन् 1664 में मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ जिले के लिघौड़ा ब्लाक स्थित कंकर–कंचन ग्राम में हुआ था। 12 वर्ष की आयु तक पहुंचते–पहुंचते माता–पिता शत्रुओं/आततायियों की भेंट चढ़ चुके थे। ऐसी स्थिति में इस अदम्य साहसी बालक का लालन–पालन कैसे हुआ होगा? – इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है।

उन्होंने अपने संघर्ष काल में ही अनेक ग्रंथों की रचना भी की। उनके साहित्य का सम्पादन प्रख्यात कवि, लेखक वियोगीहरि जी ने सन् 1726 में ''छत्रसाल ग्रंथावलि'' के रूप में किया था। उनके एक ग्रंथ ''छत्रसाल विलास ग्रंथ'' का भी उल्लेख मिलता है। वे स्वयं कवि और साहित्यकारों का बड़ा सम्मान करते थे। छत्रसाल अपनी 82 वर्ष की आयु होने पर नौगाँव के समीप पौष शुक्ल 3 दिसम्बर 1731 को अपना नश्वर शरीर त्याग कर परम धाम को प्रस्थित हुये।

**छत्ता तेरे राज में, धक–धक धरती होय।**
**जित–जित घोड़ा मुख करे, तित–तित फत्ते होय।**

# विश्व कल्याण का प्रकाश पुंज बिखेरते महात्मा गौतम बुद्ध

कृष्णमुरारी त्रिपाठी अटल

भारतीय संस्कृति की महान परम्परा में समय– समय पर ईश्वरीय अवतारों, ऋषि – महर्षियों, ज्ञानी– ध्यानी सन्तों के प्राकट्य ने राष्ट्र जीवन को सञ्जीवनी प्रदान की। और कालचक्र की कुरीतियों से भारतीय जीवन पद्धति में घर कर गई, मूर्च्छा को दूर किया है। उसी परम्परा में महात्मा गौतम बुध्द का दर्शन – सतत् प्रकाश पुंज बिखेर रहा है। उनका जन्म ऐसे कालखण्ड में हुआ जब – कुरीतियाँ, आडम्बर, पाखण्ड और ऊंच – नीच भेदभाव , वैमनस्य, राज्य प्राप्ति के लिए युद्ध जैसे दुर्गुण मानवता को ग्रस रहे थे। ऐसे कालखण्ड में महात्मा बुध्द का प्राकट अप्प दीपो भव का सन्देश लेकर मानव जीवन को सत्मार्ग की राह दिखाने वाला सिद्ध हुआ। और उन्होंने भारत की आध्यात्मिक चेतना को पुनश्च जागृत किया।

महात्मा गौतम बुध्द का जन्म 563 ई.पू. को वैशाख पूर्णिमा के दिन इक्ष्वाकुवंशीय क्षत्रिय शाक्य कुल के राजा शुद्धोधन एवं माता महामाया की संतान के रूप में तत्कालीन शाक्य गणराज्य की राजधानी लुम्बनी द्धवर्तमान नेपालऋ में हुआ था। जन्म के कुछ समय पश्चात ही माता का निधन हो जाने के कारण उनका पालन महाप्रजापती गौतमी ने किया था।उनका नाम सिद्धार्थ रखा गया। सोलह वर्ष की आयु में उनका विवाह यशोधरा से हुआ , जिनसे उनकी संतान राहुल का जन्म हुआ। 29 वर्ष की अवस्था में वे गृहत्याग कर ज्ञान प्राप्ति की खोज में निकल गए।इसके पीछे जरा, रोग, मृत्यु और सन्यासी कारण बने। तदुपरान्त उन्होंने कठोर साधना प्रारंभ कर दी । और 528 ईसा पूर्व को वैशाख पूर्णिमा के दिन ही बोधगया में एक पीपल वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए आत्म बोध – तत्वज्ञान प्राप्त किया। फिर यहीं से वे तथागत बुद्ध के नाम से जाने गए।उनके सहज– सरल पाली भाषा में दिए जाने वाले उपदेशों से लोग अत्यन्त प्रभावित होने लगे। और आध्यात्मिक चेतना से पोषित होने लगे।

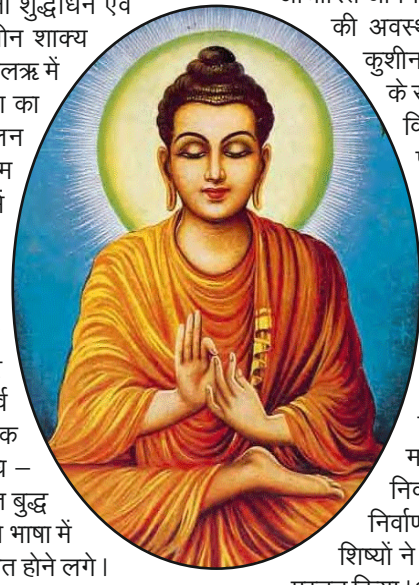

महात्मा गौतम बुद्ध ने चार आर्य सत्य बताए हैं – दु:ख, दु:ख की उत्पत्ति, दु:ख से मुक्ति और मुक्तिगामी आर्य–आष्टांगिक मार्ग। उन्होंने मनुष्य को दुरूख से मुक्ति के लिए आष्टांगिक मार्गो के माध्यम से पथ प्रशस्त किया।ये आष्टांगिक मार्ग हैं –सम्यक दृष्टि – (सम्यक् शब्दार्थ है –सही, उचित, उपयुक्त, शुद्ध आदि)। सम्यक् दृष्टि अर्थात् जीवन के दु:ख और सुख का सही अर्थ में अवलोकन।चार आर्य सत्यों का ज्ञान।

सम्यक् संकल्प यानि यदि दु:ख से छुटकारा पाना के दृढ़ संकल्प । सम्यक वाक अर्थात् – यदि मनुष्य की वाणी में शुचिता और सत्यता का होना। सम्यक् कर्म का अभिप्राय कर्म की शुद्धि। सम्यक आजीविका यानि किसी अन्यायपूर्ण उपाय के स्थान पर न्यायपूर्ण जीविकोपार्जन करना, जो उचित और शुभमय है। सम्यक प्रयास अर्थात् जीवन में शुभ्रता व आत्मावलोकन के साथ जीवन निर्वाह का प्रयत्न करना। और सम्यक् स्मृति यानि चित्त में एकाग्रता के भाव से मानसिक योग्यता में वृद्धि।

सम्यक् समाधि का अभिप्राय – आष्टांगिक मार्गो का पालन करते हुए निर्वाण अथवा मुक्ति पथ का अनुगमन करना। पंचशील सिध्दांतों का उपदेश देते हुए उन्होंने मनुष्य के लिए सदाचारों की रीति – निर्धारित की थी। उनके अनुसार मनुष्य को हिंसा , चोरी, व्याभिचार , नशा नहीं करना चाहिए और न ही झूठ बोलना चाहिए।

महात्मा गौतम बुध्द ने मध्यम मार्ग (मध्यमा प्रतिपद) का सिद्धांत दिया इसके अनुसार जीवन का संतुलित ढंग से निर्वाह करना चाहिए। और किसी भी प्रकार की अति से बचना चाहिए। महात्मा बुद्ध का दर्शन अनीश्वरवाद , अनात्मवाद व क्षणिकवाद की त्रयी का भी बोध कराता है। लेकिन मनुष्य को सत्कर्म करने और पुनर्जन्म की मान्यता पर भी बल देता है।गौतम बुद्ध जब अप्प दीपो भव कहा तो उन्होंने मनुष्य को धर्मपथ पर – कर्मपथ पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने मनुष्य को सत्य पर आधारित जीवन पर चलने की प्रेरणा दी। 483 ई.पू. को 80 वर्ष की अवस्था पूरी करने के बाद उन्हें वैशाख पूर्णिमा को कुशीनगर में निर्वाण की प्राप्ति हुई। महात्मा गौतम बुध्द के सम्पूर्ण जीवन में श वैशाख पूर्णिमा का अपना एक विशिष्ट महत्व है। याकि यह कहा जाए कि – वैशाख पूर्णिमा ने ही उनके जीवन को पूर्ण किया, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनका जन्म – वैशाख पूर्णिमा को, ज्ञान प्राप्ति वैशाख पूर्णिमा को और महापरिनिर्वाण भी वैशाख पूर्णिमा को ही हुआ। साथ ही उनके सम्पूर्ण जीवन दर्शन पर दृष्टिपात करने पर यह भी स्पष्ट होता है कि – महात्मा बुद्ध ने अपने जीवन काल में, कभी भी बौद्ध मत पंथ का अलग से किसी पंथ या धर्म के रूप में प्रचार प्रसार नहीं किया। बल्कि उन्होंने मनुष्य को दु:खों से मुक्ति, सदाचरण व मोक्ष / निर्वाण प्राप्त करने का रास्ता दिखलाया। उनके निर्वाण के पश्चात ही उनके तत्कालीन अनुयायियों/ शिष्यों ने उनके दर्शन को पृथक बौद्ध मत पंथ के रूप में प्रस्तुत किया। और बौद्ध विहार, स्तूप, मठ इत्यादि बनाए।

गौतम बुध्द के निर्वाण प्राप्ति के बाद उनके शिष्यों ने राजगृह में एक परिषद का आह्वान किया। और उनकी शिक्षाओं को संहिताद्ध किया गया। और इसके लिए चार बौद्ध संगीतियों का आयोजन हुआ। तत्पश्चात महात्मा बुद्ध के तीन मुख्य शपिटकश पाली भाषा में बने। विनय पिटक (व्यवस्था के नियम), सुत्त पिटक (उपदेश एवं सिद्धांत) तथा अभिधम्म पिटक (बौद्धदर्शन)। इन्हें ही त्रिपिटक के नाम से जाना जाता है। उन्होंने अस्तेय, अपरिग्रह, क्षमा , दया , करुणा, प्रेम, शान्ति, सद्भाव , अहिंसा, त्याग,के द्वारा मानव मुक्ति का मार्ग दिखलाया, और यह सिद्ध किया कि – संसार दु:खमय है, लेकिन उससे मुक्ति भी संभव है। अतएव मनुष्य को चाहिए कि उनके जीवन दर्शन से शिक्षा लेते हुए – सम्यक ढंग से जीवन के महत् उद्देश्यों के प्रति अपने कर्त्तव्यों को निभाएं। और लोकल्याण के प्रति कटिबद्ध हों। उनका दर्शन भारतवर्ष की अमूल्य थाती है, जो सम्पूर्ण विश्व को हमारे सांस्कृति उत्कर्ष के साथ जोड़ती है। और विश्वकल्याण की उदात्त भारतीय चेतना से झंकृत करती है।

# श्रीराम नवमी उत्सव मनाना भी अपराध..?

**प्रशांत पोळ**

दिनांक 1 अप्रैल को भोपाल में हुतात्मा हेमू कालानी जन्मशताब्दी समारोह संपन्न हुआ. इस समारोह में विदेशों से भी अनेक सिंधी भाषिक भाई – बहन आए थे. इन में से, कराची से आए हुए नारायणदास ने बताया की 'पाकिस्तान में हिन्दू अपना कोई भी त्यौहार ध उत्सव सार्वजनिक रूप से, खुले में नहीं मना सकते. मंदिर में या किसी के घर पर ही मनाना पड़ता हैं।'

इस रामनवमी को बंगाल, बिहार आदि स्थानों पर जो कुछ हुआ, उसे देखकर लगता हैं, की 'क्या, भारत के कुछ स्थानों पर भी हिन्दू अपना उत्सव सार्वजनिक रूप से नहीं मना सकते?'

इस वर्ष गुरुवार, 30 मार्च को रामनवमी थी. वर्षो से चली आ रही परंपरा के अनुसार, देश के लगभग सभी गांवों में, शहरों में इस दिन भगवान राम की शोभायात्रा निकलती हैं. इस वर्ष भी निकली. किन्तु बंगाल के हावड़ा में, उत्तर दिनाजपुर जिले के डालखोला में, इस्लामपुर में, वडोदरा में, छत्रपती संभाजी नगर में (पूर्व के औरंगाबाद में), मुंबई के उपनगर मालाड में मालवणी बस्ती में इन शोभायात्रा पर न केवल पथराव हुआ, वरन लाठी, काठी, रश्वड और बमों से हमला हुआ. डालखोला तो 1959 तक बिहार का हिस्सा था, जो बाद में पश्चिम बंगाल में चला गया. इस्लामपुर भी बिहार की सीमा से सटकर हैं. वडोदरा और छत्रपती संभाजी नगर में तो अधिकतम दंगाई पकड़े गए. किन्तु ऐसा पश्चिम बंगाल में नहीं हुआ. वहाँ हिंदुओं पर ही दंगा भड़काने का आरोप लगा. उन्हे ही गिरफ्तार किया गया. ऊपर से ममता बेनर्जी ने पश्चिम बंगाल के हिंदुओं को सलाह दी की 'रमजान के इस पवित्र महीने में मुस्लिम मुहल्लों के पास न जाए..'

महाराष्ट्र के छत्रपती संभाजी नगर में एम आई एम के स्थानीय सांसद इम्तियाज जलील की उपस्थिति में दंगा भड़का. उपद्रवियों ने किराड़पुरा के हनुमान मंदिर में पत्थर बरसाएं और दस से ज्यादा पुलिस की गाड़ियों को आग के हवाले किया ।

पश्चिम बंगाल के दंगे यहीं पर थमे नहीं. दूसरे दिन, अर्थात शुक्रवार 31 मार्च को, जुम्मे की नमाज के बाद अनेक स्थानों पर मुस्लिम समुदाय ने आक्रमण किया. 1 अप्रैल को बिहार के सासाराम में दंगे भड़के. बाद में नालंदा और बिहार शरीफ में. आज 7 अप्रैल को भी बंगाल और बिहार के अनेक शहरों में स्थिति तनावपूर्ण हैं. अनेक मुस्लिम बहुल क्षेत्र में रहने वाले हिन्दू अत्यंत दबाव में, डर के साये में जी रहे हैं. बिहार के अनेक हिन्दू, दंगे की रात से गायब हैं। इन सब स्थानों पर 'मोडस ऑपरेंड़ी' एक जैसी थी. पहले हिन्दू शोभायात्रा या मंदिरों पर पत्थर फेंककर कठोरतम हमला करना और बाद में आरोप हिन्दू समूह पर लगाना. इस अभियान को जाने अनजाने में मदद कर रहे थे, राजदीप सरदेसाई. पहले उन्होंने ट्वीट किया, एक हिन्दू युवक का विडिओ, जिसमे उस युवक के हाथ में एक देसी कट्टा दिख रहा हैं. मजेदार बात यह, की वह युवक उस कट्टे (गन) को लहरा नहीं रहा हैं, तो छुपा रहा हैं।

लेकिन उसी दिन बंगाल से ऐसे अनेक चित्र या विडिओ या रहे थे, जिनमे मुस्लिम युवक खुले आम लाठी, रॉड और तलवार घुमा रहे थे. हिंदुओं को मार रहे थे. रक्त से सने हिंदुओं के फोटो मीडिया में आ रहे थे. राजदीप सरदेसाई के सोशल मीडिया अकाउंट से ये सब नदारत थे. वे तो इस बात पर जोर दे रहे थे की कैसे हिन्दू राम नवमी शोभायात्रा में आक्रामक हैं. राणा अय्यूब 30 मार्च को सूरत के राम नवमी शोभायात्रा का एक विडिओ ट्वीट करती हैं, की कैसे यह शोभायात्रा एक मस्जिद के सामने से गुजर रही हैं. पिछले अनेक वर्षो से सूरत में शोभायात्रा का यही मार्ग हैं. मार्ग में मस्जिद पहले से हैं. तो 'क्या किसी मस्जिद के सामने से कोई हिन्दू शोभायात्रा या जुलूस नहीं जाना चाहिए', ऐसा राणा अय्यूब का कहना हैं?

इन वामपंथी पत्रकारों के ट्वीट्स का, आलेखों का परिणाम हुआ, व्ब (व्तहंदप्रंजपवद वि प्सिंउपब ब्ववचमतंजपवद) पर। 57 इस्लामी देशों के इस संगठन ने, भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करते हुए, कहा की 'भारत के अनेक राज्यों में मुस्लिम समुदाय पर जो हमले हुए, उनकी हम भर्त्सना करते हैं।' यह तो 'उल्टा चोर कोतवाल को डांटे' जैसा हुआ. अपने ही देश में हिन्दू, अपने आराध्य प्रभु श्रीराम के जन्मोत्सव पर शोभायात्रा निकालता हैं, जुलूस निकालता हैं, मुस्लिम समुदाय अनेक स्थानों पर उन शोभायात्राओं पर हमला करता हैं, उत्सव को बंद करवाता हैं, और ओआईसी जैसा संगठन कहता हैं, 'भारत में मुस्लिम सुरक्षित नहीं हैं।' इन वामपंथी, हिन्दू द्वेष का चश्मा पहने पत्रकारों के कारण, उत्सव पर हमला करने वाले उपद्रवियों के कारण, हम हमारे आराध्य का उत्सव भी ठीक से नहीं मना सकते, यह हम सब का दुर्भाग्य हैं..!

# मुद्दाविहीन विपक्षः जातीयता और सांप्रदायिकता के सहारे

वीरेंद्र सिंह परिहार

कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने गत दिनों प्रधानमंत्री मोदी को एक पत्र लिखकर कहा कि जातिगत जनगणना के अभाव में सामाजिक न्याय के कार्यक्रमों में डाटा अधूरा है. खड़गे ने अपनी औपचारिक चिट्ठी में यह भी लिखा, कि 2021 में नियमित 10 वषह्नय जनगणना की जानी थी लेकिन यह नहीं हो पाई है।इसे तत्काल किया जाए और व्यापक जाति जनगणना को अभिन्न अंग बनाया जाए, क्योंकि जातीय जनगणना के अभाव में समाजिक न्याय के कार्यक्रमों के लिए डेटा अधूरा है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जिन्होंने बिहार में जाति जनगणना शुरू करा दी है तत्काल इस मांग का समर्थन किया। दूसरी तरफ इसके पहले कर्नाटक की एक सभा में बोलते हुए राहुल गांधी ने मोदी सरकार से कहा कि वह 2011 में किए गए जनगणना में जातिगत डेटा को सार्वजनिक करें। लोगों को बताएं कि देश में कितने ओबीसी, दलित और आदिवासी हैं। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं तो यह ओबीसी का अपमान है। बात सिर्फ इतने पर समाप्त नहीं हुई, राहुल गांधी ने यह भी कहा कि आरक्षण पर से 50:की सीमा हटा देनी चाहिए।

दूसरी तरफ भाजपा ने इस तरह की मांग पर सधी प्रतिक्रिया व्यक्त की. बीजेपी नेता और एससी–एसटी कमीशन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय सोनकर शास्त्री ने कहा – अगर सरकार के गजट के हिसाब से देखा जाए, तो देश में करीब 65 सौ जातियां हैं और 50,000 से ज्यादा उपजातियां हैं. हम किस आधार पर किस जाति और उपजाति के लिए स्पेशल पैकेज तैयार करेंगे ? यह संभव ही नहीं है. कुल मिलाकर शास्त्री ने इसे कांग्रेस पार्टी और दूसरे विरोधी दलों का 2024 के लोकसभा चुनाव को देखते हुए इसे मात्र चुनावी मुद्दा बताया।गौर करने की बात यह भी है कि वर्ष 2011 की जनगणना जब हुई थी तब यूपीए का राज था। मोदी सरकार तो वर्ष 2014 में आई।ऐसी स्थिति में बड़ा सवाल यह कि यूपीए सरकार ने 3 सालों तक जातिगत जनगणना के डेटा को क्यों दबाए रखा? क्या यह सच्चाई नहीं कि देश की आजादी के बाद कांग्रेस पार्टी सदैव जाति विहीन और वर्ग विहीन समाज की बात करती रही। पंडित जवाहरलाल नेहरू से लेकर राजीव गांधी तक कांग्रेस पाटह्न सदैव जातिगत जनगणना का विरोध करती रही।वर्ष 1951 में जब जाति जनगणना की बात उठी तो पंडित नेहरू ने इसका सख्त विरोध किया था।इंदिरा गांधी ने वर्षों तक मंडल कमीशन की रिपोर्ट को दबाए रखा।यहां तक कि वर्ष 1990 में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने मंडल कमीशन की रिपोर्ट को लागू किया था तब तत्कालीन विपक्ष के नेता राजीव गांधी ने इस कदम को विभाजन कारी एवं समाज को बांटने वाला बताया था।

लोगों की याददाश्त में अच्छी तरह होगा कि एक जमाने में बसपा का नारा होता था –जिसकी जितनी संख्या भारी,उसकी उतनी भागीदारी. आश्चर्यजनक बात यह कि बसपा में अब ऐसे नारे बहुत कम सुनाई देते हैं, लेकिन उसका अनुकरण कांग्रेस पाटह्न और नीतीश कुमार जैसे अपने को समाजवादी कहने वाले नेता कर रहे हैं।राहुल गांधी जब कहते हैं कि 50: की आरक्षण की सीमा रेखा टूटनी चाहिए, तो उनकी जातिगत जनगणना की मांग को समझा जा सकता है . सभी को विदित होगा कि भारत का सर्वोच्च न्यायालय यह कह चुका है – कि आरक्षण की सीमा 50:से ज्यादा नहीं होनी चाहिए, जिससे सामाजिक न्याय और प्रतिभा का समुचित समन्वय हो सके. लेकिन वोट बैंक की राजनीति के चलते भाजपा को छोड़कर और दूसरे दल सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले को सतत रूप से असफल करने की कोशिश करते रहे हैं।इसी का नतीजा है कि तमिलनाडु जैसे राज्यों में आरक्षण की सीमा 70:से ऊपर तक जा चुकी है। बीच–बीच में दूसरे राज्यों में भी ऐसे प्रयास होते रहते हैं, लेकिन न्यायपालिका के चलते ऐसे राजनीतिक दलों के मंसूबे पूरे नहीं हो रहे हैं।

यह तथ्य भी महत्वपूर्ण हैं, किस देश में जातीयता के साथ सांप्रदायिकता भी सत्ता पाने का एक बड़ा कारक रहा है।इस मामले में चाहे कांग्रेस पाटह्न रही हो या अन्य विपक्षी पार्टियां मुस्लिम वोट बैंक के लिए वह सतत तुष्टीकरण करती रही हैं। इसीलिए मुस्लिमों को राष्ट्र की मुख्यधारा से नहीं जुड़ने दिया गया और उन्हें तंगदिल और कट्टर बनाया गया।हिंदुओं के लिए जहां पर्दा प्रथा, बाल विवाह, सती प्रथा आदि सामाजिक बुराइयां थी, वही मुसलमानों के लिए पर्दा प्रथा, तीन तलाक, हलाला, बहुविवाह उनके निजी मामले थे. हद तो यह हुई कि इस मामले में अलगाववाद और आतंकवाद तक से समझौता किया गया। तभी तो माफिया अतीक अहमद और उसके भाई की हत्या को संविधान और लोकतंत्र की हत्या बताया जाता है. बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव जैसे लोग अतीक को अतीक जी कहते हैं, ठीक उसी तर्ज पर जब ओसामा बिन लादेन को अमेरिका द्वारा मार दिए जाने पर दिग्विजय सिंह ने ऐसे कुख्यात आतंकी को लादेन जी कहा था। तुष्टीकरण का परिणाम है कि आज भी हिंदुओं के त्यौहारों पर आयोजित शोभा यात्राओं पर देश के कई हिस्सों में पत्थरबाजी होती है, आगजनी होती है और बम चलाए जाते हैं, लेकिन इस देश के विपक्षी नेताओं के जुबान से ऐसी घटनाओं पर निंदा के एक शब्द भी नहीं निकलते। तल्ख़ और बड़ी सच्चाई है कि अकेले नरेंद्र मोदी आज भी देश के विपक्षी नेताओं पर भारी हैं। कई जनमत सर्वे यह बताते हैं कि वर्ष 2024 के आम चुनाव में भी भाजपा और नरेंद्र मोदी एकतरफा जीत दर्ज करेंगे। ईडी और सीबीआई के चलते विपक्ष भले एकजुट हो जाए, लेकिन जैसा कि देश की बड़ी संख्या का मानना है – आएगा तो मोदी ही! ऐसी स्थिति में जब राहुल गांधी, और पूरी कांग्रेस पाटह्न और दूसरे विपक्षी दल सभी दाँवपेच आजमा कर देख चुके हैं। चाहे राफेल मामला रहा हो चाहे बैंकों को लूट कर विदेश भागने वालों का मामला रहा हो, वर्तमान में अडानी मामले को लेकर विपक्षी जैसा प्रलाप कर रहे है – किसी भी मामले में मोदी की छवि कहीं भी तनिक प्रभावित नहीं हुई. ऐसी स्थिति में कांग्रेस पाटह्न समेत मुद्दा विहीन दूसरे विपक्षी दलों को लगता है, की जाति और संप्रदाय के सहारे शायद मोदी को घेरा जा सकता है। हो सकता है इससे देश में एक नई उथल पुथल मच जाए, और सत्ता तक जाने का रास्ता निकल सके। लेकिन बड़ा सच यह है की एक और तो व्यापक स्तर पर हिंदुत्व का जागरण और दूसरे मोदी सरकार की जनकल्याणकारी तथा देश को मजबूत करने वाली नीतियों के चलते देश का मतदाता सच्चाई को बखूबी समझ चुका है। इसलिए सत्ता के सौदागरों का समाज और देश को बांटने वाला अभियान सफल हो सकेगा– संभव दिखता है नहीं !

# ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई का कृषि कार्यो में महत्व

सूर्यकान्त नागरे (वैज्ञानिक कृषि विज्ञान अनूपपुर)

कृषि कार्यो में जुताई का अपना महत्व है। बिना खेत में हल चलाए कृषि कार्य असम्भव है। ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई कृषि कार्यो में एक महत्वपूर्ण अंग है।

**ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई का कृषि कार्यों में महत्व :–** कृषि कार्यो में विभिन्न कियाओं का अपना अलग ही महत्व है। खेतो की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई से भी किसानों को बहुत से फायदे होते है। ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई 3 साल में एक बार किसानों को अवश्य करते रहना चाहिए। ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई भूमि की दशा के अनुसार करना चाहिए। जैसे भारी भूमि में 4–6 इंच तथा हल्की भूमि के लिये 6–12 इंच तक करना चाहिए। खेतों द्वारा साल भर हम फसल लेते रहते हैं, जैसे हमारा शरीर स्वस्थ होकर भरपूर ऊर्जा देता है उसी प्रकार खेतों की भी देखभाल करनी पड़ती है। इससे खेतों की मृदा संरचना व दशा भी सुधरती है तथा फसलों को कीड़ों व रागों से मुक्त रखता है।

**ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई की कृषि कार्यो में भूमिका :–** ग्रीष्म के मौसम में सामान्यतः कृषक खेत के अन्य कार्यो से मुक्त रहते हैं एवं खेत फसल रहित होते है। ग्रीष्म के मौसम में खेतों की गहरी जुताई करने पर भूमि का तापकम बढ़ने से मृदा की जलधारण क्षमता व भूमि में वायु संचार में वृद्धि होती है। साथ ही साथ फसलों की जड़ों को गहराई तक प्रवेश करने के लिये उचित अवसर मिलता है एवं पोषक तत्वों की आपूर्ति भी बढ़ती है। इसके अलावा ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई के कारण भूमि जनित रोगाणु एवं कीड़े–मकोड़े आदि सूर्य की तेज गर्मी से नष्ट हो जाते हैं जिससे आगे बोई जाने वाली फसल पर लाभदायक प्रभाव होता है।

**ग्रीष्मकालीन जुताई के अनेक लाभ :–**

1.मृदा वायु संचार में वृद्धि :– रबी की फसल के बाद ग्रीष्मकालीन जुताई से भूमि में खुलकर वायु का संचार होता है। इससे मृदा में नाइट्रोजन तेजी से बनता है व जैवीय पदार्थ नाइट्रेट में बदल जाते है।

2.मृदा में उचित ताापमान बनाये रखना :– ग्रीष्मकाल में मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करने पर सूर्य का तापमान समान रूप से मृदा में विसरित होता है, जो खरीफ की फसलों के अंकुरण के लिये आवश्यक है।

**3.जलधारण क्षमता में वृद्धि :–** अधिकांश किसान खेत की जुताई लगातार एक ही गहराई पर करते हैं, जिससे कड़ी परत बनने के कारण वर्षा का जल भूमि में पूर्णतः अवशोषित नहीं हो पाता है। अतः मध्य अप्रैल से मध्य मई में गहरी जुताई (9 इंच से गहरी) करने से यह कड़ी परत टूट जाती है, इससे मानसुन की पहली वर्षा का अधिकांशतः पानी जमीन के अन्दर चला जाता है। पहली वर्षा के जल में वायुमण्डल में उपस्थित नाइट्रोजन भी घुली होती है। यह वर्षा जल भूमि में प्रवेश कर खेत की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी करती है।

**4.खरपतवारों का नियंत्रण :-** खरीफ फसलों को सबसे अधिक हानि खरपतवारों से होती है। कभी–कभी इन खरपमवारों के कारण फसलों के उत्पादन में 20–60 प्रतिशत तक में कमी हो जाती है। यदि इनको फसल उगने से पहले ही नष्ट कर दिया जाये तो धन व श्रम में होने वाली हानि से बचा जा सकता है। करने से बहुवर्षीय खरपतवार भी सूखकर अथवा गहराई में दबकर नष्ट हो जाते हैं। कुछ ऐसे खरपतवार जैसे– कांश, मोथा, दूब आदि की जड़ें भूमि में काफी गहराई तक चली जाती है, जिसके कारण निराई–गुड़ाई एवं खरपतावरनाशी रसायनों से पुर्ण नियंत्रण नहीं हो पाता है। ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करने से इन खरपतवारों के राइजोम, जड़ें ऊपर निकल आति है और सूर्य की गर्मी से सूखकर नष्ट हो जाती है। ग्रीष्म ;तु में 45–480 से. तापमान पर दो या तीन जुताई करने से बहुवर्षीय खरपतवार भी सूखकर अथवा गहराई में दबकर नष्ट हो जाते हैं।

**5.जल संरक्षण :** अधिकांशतः किसान फसलों की आवश्यकता के अनुसार एक निश्चित गहराई पर 6–7 इंच लगातार जुताई करते है, जिससे इस गहराई के नीचे मिट्टी की एक कड़ी परत बन जाती है, जिसके कारण खेतों में जल को अंतःकरण करने में बाधा उत्पन्न होती है, अतः अप्रैल मई में गहरी जुताई (9 इंच से गहरी) करने से यह कड़ी सतह टूट जाती है, जिससे वर्षा का सम्पूर्ण जल खेतों द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है, जिससे जल स्तर बढ़ जाता है।

**1.कीट–व्याधियों का नियंत्रण :** रबी की फसलों को हानि पहुँचाने वाले रोग के रोगजनक, रोगाणु, हानिकारक कीड़े फसल की कटाई के बाद दरारों में सुषुप्तावस्था में पड़े रहते हैं और जब अगली फसल बोई जाती है तो रोगजनक रोगाणु कीड़े सक्रिय होकर फसलों को हानि पहुँचाना प्रारम्भ कर देते हैं। ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई से रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई हो जाने से रोगजनक कीड़े, कीट प्यूपा एवं लार्वा आदि भूमि की ऊपरी सतह पर आ जाते हैं और सूर्य की गर्मी से तथा पक्षियों द्वारा खा लिये जाने से नष्ट हो जाते हैं। विभिन्न हानिकारक रोगाणु कवक आदि भी इसी प्रकार तेज धुप में नष्ट हो जाते हैं, जिससे खरीफ में उगाई जाने वाली फसलों में कीड़े व बिमारी लगने की सम्भावना कम हो जाती है।

**2.मृदा की भौतिक दशा में सुधार :–** गर्मी में खेत की गहरी जुताई करने पर फसलों के अवशेष व खरपतवार मृदा में मिल जाते है और सड़–गल कर मृदा में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा में वृद्धि करते हैं। इससे मृदा की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

3.मृदा उर्वरता में वृद्धि : खेतों की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करने से मृदा में उपलब्ध अवशेष सड़–गल जाते हैं और ये धीरे–धीरे मृदा में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा में वृद्धि करते हैं। मृदा में कार्बनिक पदार्थ की मात्रा बढ़ने पर सूक्ष्म जीवों की कियाएँ भी बढ़ती हैं, जो अतंतः मृदा उर्वरता में वृद्धि करते हैं।

**ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई के प्रमुख उद्धेश्य :**

1. बुवाई के लिये उपयुक्त खेत की तैयार करना एवं बोने वाली फसल की उचित वृद्धि के लिये मिट्टी की भौतिक दशाओं में अनुकूल परिवर्तन करना। 2. भूमि में जलधारण की क्षमता को बढ़ाना। 3. भूमि में वायु संचार तथा वायु से संबंधित विभिन्न रासायनिक एवं जैविक क्रियाओं के लिये अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करना।

**ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई के लिये कौन सा समय उपयुक्त ?**

रबी मौसम की फसलों की कटाई के तुरन्त बाद का समय ग्रीष्मकालिन गहरी जुताई के लिये उपयुक्त होता है। विभिन्न रबी फसलों की कटाई फरवरी के अंतिम सप्ताह से लेकर अप्रैल माह के अंतिम तक की जाती है। यह कटाई बोई गई फसल पर निर्भर करती है। ग्रीष्मकालीन जुताई फरवरी माह के अंतिम सप्ताह से लेकर मई माह के मध्य तक करना चाहिए। ध्यान रहे कि जुताई के पश्चात खेत को 15–20 दिन तेज गर्मी मिल जाये। जुताई में देरी करने पर नमी कम हो जाती है जिससे जुताई करने में कठिनाई होती है। साथ ही साथ भूमि को तेज गर्मी न मिलने के कारण कीड़े–बीमारियों के अवशेष नष्ट नहीं हो पाते। प्लटने वाले हल से कार्य शीघ्रता से एवं अपेक्षित गहराई तक कार्य करना आसान रहता है।

# आईटी इंजीनियर ने गोबर की ईंटों से बनाया मकान यह ठंड-गर्मी व बैक्टीरिया से मुक्ति

**दमोह**– बिगड़ते पर्यावरण की चिंता आईटी इंजीनियर डॉ. चयन लोहा को गांव खींच लाई। उन्होंने 8 लाख रूपए का पैकेज ठुकराया और गांव आकर गौ ाला खोज ली। गाय के गोबर से ईटें बनाई और इनसे ऐसा मकान बनाया जो ठंड–गर्मी और बैक्टीरिया मुक्त है। यह प्रदेश का दूसरा ऐसा प्रयोग है। इससे पहले ग्वालियर में ऐसा मकान बन चुका है। डॉ. लोहा ने यह काम दमोह जिले के बड़गुंवा गांव में किया। यहां उन्होंने 10 हजार ईटें तैयार की हैं। बोटेक आईटी व आयुर्वेद से पंचगव्य की पढ़ाई कर चुके डॉ. लोहा ने बताया उन्होंने।

**ऐसे बनाई ईंट :–** 90 प्रतिशत गोबर, 10 प्रतिशत मिल्ली चूना, बेल का फल, गोबर की ईंट तैयार करने के लिए मिश्रण तैयार करते हैं। जिसमें 90 प्रतिशत और 10 प्रतिशत मिल्ली, चूना, नींबू का रस, बेल का फल मिलाया जाता है। इसे सांचों में ढालकर वैदिक ईंट बनाई जाती है। 1 हजार ईंट बनाने में 1600 किलो गोबर लगता है।

**इसलिए बैक्टीरिया मुक्त है वैदिक हाउस–** आधुनिक विज्ञान के जीवाणु सिद्धांत के अनुसार बैक्टीरिया को पनपने की मौका तब मिलता है, जब उनके अनुकूल वातावरण हो। शीतऋतु में शीत के वायरस व ग्रीष्म में गर्म वातावरण के वायरस जन्म लेते हैं। वैदिक प्लास्टर युक्त भवन एडेक्टोविक्ट(काय और एडोव सिद्धांत) पर आधारित होने के कारण गर्मी में ठंडे व ठंड में गर्म होते हैं। जिससे प्रतिकूल वातावरण में वायरसनहीं पनपते, जबकि सामान्य ईंट वाले घर में बैक्टीरिया के लिए अनकूल वातावारण मिल जाता है, जिसमें वह कई गुना पनपते हैं। गाय की गोबर से ईंट व वैदिक प्लास्टर बनाने का हुन अपने गुरू डॉ. एसडी मलिक।

## वदतु संस्कृतम्

| संस्कृत | | हिन्दी |
|---|---|---|
| भवान् /भवती कुत्र गच्छति | – | आप कहाँ जा रहे हैं। |
| अहम् गृहम्, पाठशालाम्, कार्यालयम्, विपनीम् गच्छामि। | – | मैं घर, पाठशाला, कार्यालय, दुकान को जाता हूँ। |
| भवतः/भवत्याः विषये श्रुतवान् आसाम्। | – | आप के विषय में सुना था। |
| मेलनेन बहु संतोषः | – | मिलकर बहुत अच्छा लगा। |
| भवन्तं /भवतीं कुत्रापि दृष्टवान | – | आपको कहीं देखा है। |

## पहेली - 1

**देश भक्ति की प्रखर आग, स्वातंत्र्य अमर वह सेनानी।**
**दो जन्मों की सश्रम कारा, सहकर हान नहीं मानी।**
**जल–जहाज से कूद पड़ा, सागर की लहरें चीर गया।**
**हटा गया गोरों की सत्ता, कौन वीर रणधीर भया?**

आत्मीयता से चलने वाली सेवा सेवित को स्वस्थ व सेवक को शुद्ध बनाती है, इस उक्ति को अपने शक्ति, भक्ति व निःस्वार्थता से चरितार्थ करने वाले सद्गुरु सेवा न्यास के सभी कार्यकर्ता तथा हितैषियों का अभिनन्दन।

**डॉ. मोहन भागवत सरसंघचालक**

चित्रकूट प्रवास के दौरान
सद्गुरु सेवा ट्रस्ट में

# मध्यप्रदेश ने जीआई का परचम लहराया

## प्रदेश के शरबती गेंहू और भेड़ाघाट के पत्थर शिल्प सहित 9 उत्पाद हुए जीआई पंजीकृत है

**मध्यप्रदेश का सुप्रसिद्ध शरबती गेंहू अब देश की बौद्धिक संपदा में सम्मिलित हो गया है। उत्पाद श्रेणी में शरबती गेंहू सहित रीवा के सुंदरजा आम को हाल ही में जीआई रजिस्ट्री द्वारा पंजीत किया गया है। खाद्य सामग्री श्रेणी में मुरैना गजक ने जीआई टैग प्राप्त किया है। हस्तशिल्प श्रेणी में जबलपुर के पत्थर शिल्प, प्रदेश की गोंड पेंटिंग, ग्वालियर के हस्तनिर्मित कालीन, डिंडोरी के लोहशिल्प, वारासिवनी की हैंडलूम साड़ी तथा उज्जैन के बटिक प्रिंट्स को भी जीआई टैग प्राप्त हुआ है। शरबती गेंहू सीहोर और विदिशा जिलों में उगाई जाने वाली गेंहू की एक क्षेत्रीय किस्म है जिसके दानों में सुनहरी चमक होती है। इस गेंहू की चपाती में फाइबर, प्रोटीन और विटामिन बी और ई प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। शरबती गेंहू को आवेदन क्रमांक 699 के संदर्भ में जीआई टैग जारी किया गया है।**

**भेड़ाघाट का पत्थर शिल्प** –जबलपुर का पत्थरशिल्प भेड़ाघाट में मिलने वाले संगमरमर पर केंद्रित है। इस हस्तशिल्प में भगवान की मूर्तियां, नक्काशीदार पैनल, सजावटी वस्तुएं और बर्तन बनाए जाते हैं। इस हस्तशिल्प का निर्यात मुख्यत फ्रांस, अश्वस्ट्रेलिया और अमरीका में किया जाता है। इसे आवेदन क्रमांक 710 के संदर्भ में पंजीत किया गया है।

**डिंडोरी का लोहशिल्प**– डिंडोरी के अगरिया समुदाय के लोहशिल्प को आवेदन क्रमांक 697 के संदर्भ में जीआई टैग प्राप्त हुआ है। इस शिल्प में लोहे को गरम कर और पीट– पीटकर वांछित मोटाई और आकार के पारंपरिक औजार और सजावटी वस्तुएं बनाई जाती हैं।

**वारासिवनी की हेन्डलूम साड़ी**– बालाघाट के वारासिवनी में बनने वाली हैंडलूम साड़ीयों को आवेदन क्रमांक 709 के संदर्भ में जीआई टैग प्राप्त हुआ है। धारियों और चौक के जटिल पैटर्न में बनाए जाने वाली ये हल्की और महीन साड़ीयां अपनी सादगी की लिए जानी जाती हैं। सोलह हाथ की साड़ी सर्वाधिक लोकप्रिय है जिसमें प्रत्येक ताना धागा 16 बाना धागों पर बुनाया जाता है।

**रीवा का सुन्दर जाआम**– रीवा का सुंदरजा आम अपनी अनूठी सुगंध और स्वाद के लिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जाना जाता है। कम चीनी और अधिक विटामिन ई की वजह से यह आम मधुमेह रोगियों के लिए भी हितकारी होता है। सुंदरजा आम को आवेदन क्रमांक 707 के संदर्भ में जीआई टैग प्राप्त हुआ है।

**मुरैना की गजक**– मुरैना की गजक को आवेदन क्रमांक 681 के संदर्भ में जीआई टैग जारी किया गया है। गुड़ या चीनी और तिल के मिश्रण से बनी इस पारंपरिक मिठाई का 100 वर्षो से अधिक का इतिहास रहा है। जीआई आवेदन क्रमांक 701 के संदर्भ में मध्य प्रदेश की गोंड पेंटिंग को पंजीत किया गया है। मानव के साथ जुड़ाव दर्शाने वाली इस जनजातीय चित्रकला की प्रथा गोंड जनजाति में प्रचलित है जिसे विभिन्न उत्सवों और अवसरों पर बनाया जाता है। ग्वालियर के हस्तनिर्मित कालीन को जीआई आवेदन क्रमांक 708 के संदर्भ में पंजीत किया गया है। इस कालीन बुनाई में चमकीले रंगों का उपयोग कर पशु, पक्षी और जंगल के यों का रूपांकन किया जाता है। ये कालीन ऊनी, सूती और रेशम आधारित होते हैं। उज्जैन की प्राचीनतम कला बटीक प्रिंट को आवेदन क्रमांक 700 के संदर्भ में जीआई टैग प्राप्त हुआ है। बटिक शिल्पकार डाई की प्रक्रिया में मोम का प्रयोग कर कलात्मक पैटर्न और मोटिफ बनाते हैं। सुंदरजा आम और मुरैना गजक को दिनांक 31 जनवरी 2023 को जीआई प्रमाणपत्र जारी किया गया है। शरबती गेंहू और गोंड पेंटिग के जीआई प्रमाणपत्र दिनांक 22 फरवरी 2023 को जारी किया गये हैं। डिंडोरी की लोहशिल्प, उज्जैन के बटिक प्रिंट्स, ग्वालियर के हस्तनिर्मित कालीन, वारासिवनी की हैंडलूम साड़ी और जबलपुर के पत्थर शिल्प के प्रमाणपत्र दिनांक 31 मार्च 2023 को जारी किए गए हैं। प्रदेश की आदिवासी गुड़िया, पिथोरा पेंटिंग, काष्ठ मुखौटा, ढ़क्कन वाली टोकरी, और चिकारा वाद्य यंत्र के जीआई आवेदन विचाराधीन हैं।

# जबलपुर में शक्ति टास्क फोर्स गठित : महिलाओं-बालिकाओं से छेड़छाड़ करने वालों को सिखाएंगी सबक

## पुलिस अधिक्षक की अनूठी पहल, सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे सार्वजनिक स्थानों पर रहेगी फोर्स

महिलाओं व लड़कियों से छेडछाड़ करने वालों को अब बख्शा नहीं जाएगा। ऐसे मनचलों को अब शक्ति टास्क फोर्स का बल सबक सिखाएगा। दरअसल पुलिस अधीक्षक टीके विद्यार्थी ने शक्ति टास्क फोर्स का गठन किया है। इसका मुख्य उद्धेश्य जबलपुर को छेड़छाड़ मुक्त करने और बेटियों के लिये सुरक्षित शह बनाने की दिशा में तथा महिलाओं ।बालिकाओं की सुरक्षा और सम्मान की दृष्टि से पुलिस अधीक्षक तुशातकांत विद्यार्थी द्वारा अभिनव पहल करते हुये ''शक्ति टास्क फोर्स'' का गठन कर शुभारम्भ किया गया है। ''शक्ति टास्क फोर्स'' की टीम के द्वारमहाविद्यालयों/स्कूल/अन्य शैक्षणिक संस्थानों/कोचिंग स्थानों/सार्वजनिक स्थलों आटो/बस स्टैण्ड, चौपाटी स्थल, गार्डन, मॉल, इत्यादी भीड़–भाड़ वाले ऐसे सम्भावित स्थान जहाँ पर महिलाओं/बालिकाओं के साथ दुर्व्यवहार की घटनायें घटित हो सकती है, पर सतत् रूप प्रातः 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक शाम 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक भ्रमण करते हुए समझाईश दी जा रही है।

# गर्मियों में बचकर रहें हीट स्ट्रोक से

ग्रामीण इलाकों में यह सामान्यतः देखा जाता है कि गर्मी के दिनों में अत्यधिक श्रम करने वाला व्यक्ति या मजदूर काम करते–करते बेहोश हो जाता है या चक्कर खाकर गिर जाता है इस तरह की स्थिति को हीट स्ट्रोक कहते हैं किंतु इसके पहले भी कुछ अवस्थाएं होती है जो यह आभास करा देती है कि व्यक्ति हीट स्ट्रोक से ग्रसीथ हो सकता है।

डॉ..वेदप्रकाश लिल्हारे जनरल फिजिशियन

**Heat Cramps-** इसमें अधिक कार्य करने पर हमारी मांसपेशियों में दर्द होता है जिसके कारण शरीर में थोड़ी गर्माहट होती है और हमारी मांसपेशियां थोड़ी कड़क होकर दर्द देते हैं यह स्थिति शरीर में गर्मी होने के कारण अधिक पसीने में सोडियम बहने के कारण होती है इस स्थिति में व्यक्ति को छांव एवं ठंडी जगह पर रखकर अधिक पानी पीने की सलाह दी जाती है एवं कम से कम 2 या 3 दिन आराम करने कहा जाता है।

**Heat Exhaustion -** इस स्थिति में अधिक कार्य एवं गर्मी के कारण मनुष्य के शरीर पर तापमान बढ़ जाता है जिसके कारण उसके त्वचा गर्म हाथ पैर में दर्द अधिक प्यास लगना कमजोरी होना सर दर्द होना घबराहट होना एवं मांसपेशियों में अत्यधिक खिंचाव होता है यदि इस अवस्था में मरीज को पर्याप्त आराम एवं इलेक्ट्रोलाइट एवं पानी की कमी को पूरा नहीं किए जाए तो इस अवस्था में मरीज हीट सिंकोप में पहुंच जाता है।

**Heat syncope-** बहुत लंबे समय तक बहुत ही मेहनत का काम करने के कारण या बहुत गर्म एवं उमस वाले मौसम में रहने के कारण व्यक्ति का बेहोश हो जाना जिसमें उसके हाथ–पैर ठंडे एवं त्वचा नमी युक्त होती है एवं ब्लड प्रेशर कम हो जाता है ऐसी स्थिति में मरीज को ठंडी छायादार जगह पर जाकर उसके शरीर में पानी एवं इलेक्ट्रोलाइट्स की पूर्ति इंजेक्शन के द्वारा की जाती है।

**Heat stroke-** हीट स्ट्रोक एक इमरजेंसी कंडीशन है जिसमें हमारे शरीर का टेंपरेचर 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुंच जाने के कारण हमारा मस्तिष्क सही तरीके से काम नहीं कर पाता जिसके कारण व्यक्ति को चक्कर आना घबराहट होना कन्फ्यूजन की स्थिति आंख में धुंधलापन होना झटके आना या बेहोशी आना हो सकता है इस स्थिति में मरीज के श्वास लेने का पैटर्न और ब्लड प्रेशर आदि चेक करना सबसे जरूरी होता है जोकि किसी डश्वक्टर के पास ही संभव होता है ताकि शरीर का कोर बश्वडी का तापमान कम किया जा सके। ठंडे पानी में हाथ पाव को डुबा देना या ठंडे पानी से गैस्ट्रिक लैवेज करना पड़ सकता है। इस स्थिति में मरीज का अश्वब्जरवेशन मश्वनिटर के साथ करने की जरूरत पड़ती है ताकि हीटस्ट्रोक से होने वाले कॉम्प्लिकेशन से बचा जा सके।

# बरगी बांध

काजल नाविक

मध्यप्रदेश में नर्मदा नदी पर बने 30 बंधों की श्रंखला में से एक है बरगी बांध। नर्मदा नदी पर बनने वाला यह पहला बड़ा बांध है। इस परियोजना को रानी अवंतिबाई सागर परियोजना के नाम से भी जाना जाता है। यह बांध जबलपुर और आसपास के क्षेत्रो में जल आपूर्ति का एक प्रमुख स्त्रोत है। इस बांध से दो महत्वपूर्ण सिचाई परियोजना बरगी व्यपवर्तन परियोजना और रानी अवंतिबाई लोधी सागर परियोजना विकसित की गई है।

**बरगी बांध की शुरुआत** :– बरगी बाँध नर्मदा नदी पर बना एक बड़ा बांध है। केन्द्रीय जल और विधुत आयोग ने 1968 में 2,980 वर्गकिलोमीटर में सिचाई और 100 मेगावाट की जल विधुत उत्पादन क्षमता के लिए बरगी बांध निर्माण के प्रस्ताव पर विचार प्रस्तुत किया। बाद में बरगी व्यपवर्तन परियोजना बनाई गई। जिसमे सिचाई क्षमता बढ़कर 4,370 वर्गकिलोमीटर कर दी गई। बांध के निर्माण का कार्य 1974 में प्रारंभ हुआ और 1990 में पूरा हो गया।

इस परियोजना में मंडला, सिवनी और जबलपुर के कुल 162 गाँव शामिल है, जिसमे से 82 गाँव पुर्णतः डूब गये। 26979 हेक्टेयर भूमि डूब क्षेत्र में आई है, जिसमें 14570 हेक्टेयर कृषि भूमि, 8478 हेक्टेयर वन भूमि तथा 3569 हेक्टेयर अन्य शासकीय भूमि शामिल है। 7000 से अधिक विस्थापित परिवार में 43: आदिवासी, 12: दलित, 38: पिछड़ी जाति एवं 7: अन्य लोग है।

**नर्मदा नदी पर बरगी बांध** :– बांध की ऊंचाई 69 मीटर और लम्बाई 5.4 किमी है अर्थात 5357 मीटर लम्बा मिट्टी के बांध के साथ 825 मीटर लम्बा मेसनरी बांध है। इस बांध से बनी झील लगभग 75 किमी की लम्बाई और 4.5 किमी चौड़ाई के साथ 267.76 वर्ग किमी पर फैली हुई है। इस बरगी बांध परियोजना से 3 जिले लाभान्वित हो रहे है जबलपुर,मंडलाऔर सिवनी

इस परियोजना से वर्तमान में 95,000 वर्गकिलोमीटर क्षेत्रफल में सिचाई की जाती है। नर्मदा नदी के आसपास के लोगो को सिचाई और

# धर्म बदल चुके जनजातियों का खत्म हो आरक्षण

## जनजाति समुदाय ने कहा– जो भोलेनाथ का नहीं वो हमारी जाति का नहीं

**रायपुर– जनजाति सुरक्षा मंच ने यहां डी लिस्टिंग महारैली का आयोजन किया। व्ही. आई. पी. चौराहे से गाते–बजाते नारे लगाते सैकड़ों जनजाति राम मंदिर के सामने बने कार्यक्रम सभा स्थल की ओर बढ़ रहे थे। यहां सभी सभा में शामिल हुए। कार्यक्रम स्थल में भाजपा के जनजाति नेताओं और पूर्व मंत्रियों का जमावड़ा भी था। जनजातियों ने हाथों में तख्तियां भी ले रखीं थीं, इन पर लिखा था ये बात वास्तविक है, जनजाति भोले का आस्तिक है। डी लिस्टिंग कानून लागू करना होगा।**

ऐन मौके पर रैली रोक दी गई कार्यक्रम की शुरुआत में जनजाति सुरक्षा मंच के प्रांतीय संयोजक भोजराज नाग ने अपने सम्बोधन में कहा– हमारे कार्यक्रम का नाम डी लिस्टिंग महारैली था। मगर ऐन मौके पर प्रशासन ने हमारे कार्यक्रम में रैली की अनुमति हमें नहीं दी। इसके बाद कार्यक्रम को सभा तक समेट दिया गया । नाग इस बात का हवाला देकर मंच से बोले– हमें रैली की परमिशन नहीं दी गई, अरे जनजाति कोई हिंसावादी उग्रवादी नहीं है। प्रति के पूजक हैं। भोले लोग हैं,ठसी का फायदा उठाकर षड्यंत्र पूर्वक कभी शिक्षा तो कभी स्वास्थ्य के नाम पर धर्मातरण हो रहा है जो गलत है।

### क्या है डी लिस्टिंग की मांग

डी लिस्टिंग का मतलब है आरक्षण की सुविधा मिलने वाली लिस्ट से लोगों को हटाना, नए सिरे से लिस्ट को अपडेट करना।

1. डी लिस्टिंग की मांग सिर्फ उन जनजातियों के लिए हो रही है जो धर्म बदलकर, ईसाई या मुस्लिम बन गए।
2. डी–लिस्टिंग के लिए संविधान संशोधन ही विकल्प है।

- **आर्टिकल 341 में शेड्यूल कास्ट को परिभाषित किया गया है।**
- **दूसरा धर्म अपनाने वाले को एससी केटेगरी से बाहर करने का प्रावधान है।**
- **आर्टिकल 342 में अनुसूचित जनजाति को परिभाषित किया गयाहै।**
- **दूसरा धर्म अपनाने पर एसटी केटेगरी से बाहर करने का प्रावधान नहीं है। जनजाति सुरक्षा मंच इसमें बदलाव चाहता है।**
- **जनजाति सुरक्षा मंच का मानना है कि प्रदेश में बड़ी संख्या में जनजातियों का धर्म परिवर्तन हुआ है।**

### जो संस्कृति को ही नहीं मानते उन्हें सुविधा क्यों

कार्यक्रम में आए जनजाति नेताओं ने कहा कि संविधान में जनजातियों को आरक्षण इसलिए दिया गया ताकि उनकी संस्कृति और परंपराओं की रक्षा हो सके। धर्म बदलकर कुछ आदिवासी न तो इन परंपराओं को मान रहे, न पूजा पद्धति को न ही संसति को तो ऐसे में उन्हें आदिवासियों की तरह विशेष दर्जा या आरक्षण के फायदे नहीं मिलने चाहिए।

## श्री सर्वोदय दिगंबर जैन मंदिर, अमरकंटक

श्री सर्वोदय दिगम्बर जैन मंदिर तीर्थकर भगवान श्री आदिनाथ को समर्पित है। इस मंदिर में उनकी अद्भुत, मनोज्ञ, विशाल एवं विश्व में सर्वाधिक वजनी (24 टन) अष्टधातु की प्रतिमा स्थापित है। भगवान आदिनाथ जी की प्रतिमा को 28 टन अष्टधातु के कमल पर विराजित किया गया है, जो इस मंदिर को अत्यंत आकर्षित बनाता है एवं दिव्यता की अनुभूति कराता है।

वर्ष 2006 से आरंभ हुआ इस मंदिर का निर्माण कार्य मार्च 2023 में पूर्ण हुआ। 25 मार्च से 2 अप्रैल 2023 तक हुए श्रीमज्जिनेन्द्र प्राणप्रतिष्ठा पंचकल्याणक गजरथ महामहोत्सव में इस मंदिर में भगवान आदिनाथ की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की गई।

3,500 फीट की ऊंचाई पर मैकल पर्वत माला के शिखर पर बसे अमरकंटक में अवस्थित इस मंदिर का निर्माण राजस्थान के बंसी पहाड़ के गुलाबी पत्थरों से ओडिशी शैली में किया गया है।

**शाश्वत हिन्दू गर्जना में न्यूनतम दर पर**
**विज्ञापन हेतु संपर्क करें**
**भूपेन्द्र कटरे- 7898946667**

# पहाड़ चीरकर नहर बनाने वाली बबीता की कहानी

## लोग कहते थे तुम तो पागल हो, जब तालाब में पानी आया तो पूरे गांव ने दीये जलाए

मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले की बबीता राजपूत ने सहेलियों के साथ पहाड़ का सीना चीरकर 107 मीटर लंबी नहर बना दी थी, ताकि दशकों से प्यासे गांव की प्यास बुझ सके। बबीता के इसी कार्य के लिए 29 मार्च को जल शक्ति मंत्रालय ने बबीता को दिल्ली में ही जल प्रहरी अवॉर्ड से मान. प्रधानमंत्री जी ने सम्मानित किया।

बबीता बताती हैं कि जब मैं 12 साल की थी, तब मैंने भी पानी भरना शुरू कर दिया था। मैं जब छोटी थी तब से ही देखती आ रही थी कि हमारे गांव में पानी की बहुत ज्यादा समस्या है। समस्या इतनी कि गांव की महिलाओं को कई किलोमीटर दूर नलों पर पानी के लिए घंटों लाइन में लगना पड़ता था, और महिलायें पानी लेकर देरी से घर लौटती थींए तो उनके पति उनके साथ बुरी तरह मारपीट करते थे। कहते थे खाना लेट क्यों हुआए वहां 2 घंटे तक नल पर क्यों खड़ी रही। हमारे यहां महिलाएं पति के सामने ज्यादा बोलती नहीं हैं। इस कारण वे केवल पिटती रहती थीं।

माँ–बाप कहते थे स्कूल जाओ या नहीं, पहले पानी भर कर लाओ–बबीता बताती हैं कि गांव में पानी की इतनी ज्यादा समस्या थी कि मेरे जैसी गांव की सैकड़ों लड़कियां स्कूल तक नहीं जा पाती थीं। दो हजार से ज्यादा आबादी वाले गांव में हैंडपंप तो थे, लेकिन पानी गांव के बाहर लगे केवल 2 में ही आता था। इसी के चलते हैंडपंप पर भीड़ होती थी। 24 घंटे में किसी भी वक्त हैंडपंप पर चले जाएं तो वहां भीड़ ही मिलती थी, इसलिए पानी भर कर लाने में डेढ़ से 2 घंटे का वक्त लग जाता था और हमारा स्कूल तक छूट जाता था। पानी पंचायत बुलाई, फैसला हुआ कि 15 फीट ऊंचा पहाड़ तोड़ना है–

साल 2019 में हम 20 महिलाओं ने मिलकर गांव में ही पानी पंचायत बुलाई। पंचायत में अन्य महिलाओं को भी बुलाया गया। हमारे काम से कुछ पुरुष भी प्रभावित हुए थे वो भी शामिल हुए। परमार्थ समाज सेवी संस्थान ने भी हिस्सा लिया। बातचीत में ये

सामने आया कि हमें अपने गांव का तालाब भरना है। गांव का तालाब भर जाएगा तो पानी की समस्या पूरी तरह से दूर हो जाएगी। समस्या ये थी कि तालाब भरने के लिए हमें 10 से 15 फीट ऊंचा पहाड़ तोड़ना था।

मैंने इन गांवों की सभी महिलाओं से संपर्क किया। उन्हें जल संरक्षण के बारे में समझाया। करीब 12 से 1500 महिलाएं फ्री सेवा देने के लिए मेरे साथ आ गई हैं। सभी जल सहेली के रूप में काम कर रही हैं। इस काम में कुछ पुरुष भी हमारा साथ दे रहे हैं।

जो पागल बोलते थे अब वो भी तारीफ कर रहे हैं–

मोदी जी ने मुझे दिल्ली बुलाकर सम्मानित किया। मैं बेहद खुश हूं। मुझे यहां तक पहुंचाने में मेरी जल सहेलियों का बड़ा योगदान रहा है। पानी के लिए ये काम मैं अकेले नहीं कर पाती। असल में ये सम्मान उन्हीं का है। मैं किसान की बेटी हूं पिता मलखान लोधी खेती करते हैं। ये काम करने में मेरे माता–पिता और बड़े भाई ने भी काफी मदद की है। मुझे प्रोत्साहित किया, वक्त–वक्त पर मुझे सलाह दी।

**वक्तव्य**

मिशनरियों से अधिक सेवा कार्य हमारे संत करते हैं ।

डॉ. मोहन जी भागवत (सरसंघचालक)

सीमा की सुरक्षा ही राष्ट्र की सुरक्षा है ।

अमित शाह (गृहमंत्री)

**अमृतवचनम्**

इस संसार में बैर कभी भी बैर से शांत नहीं होता है,
बैर तो मैत्री से ही शांत होता है ।
**यही सनातन धर्म है।**

-महात्मा बुद्ध

## राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत बुंदेलखंड, बघेलखण्ड और महाकौशल अंचल की सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक पत्रिका शाश्वत हिन्दू गर्जना के अप्रैल अंक का विमोचन संपन्न हुआ तथा इस अवसर पर डाक मित्रों का सम्मान भी किया गया

जबलपुर

सिवनी

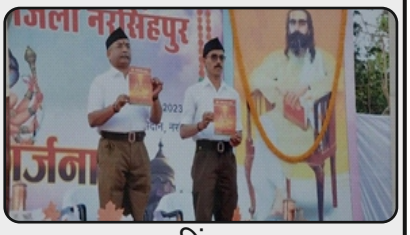

नरसिंहपुर

मैहर

लवकुश नगर

कटनी

## विवाह में कार्ड नहीं छपवाए, लोगों को पौधो लगे 400 गमलों से निमंत्रण भेजा

भोपाल– पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरुकता लाने के लिए शहर के एक परिवार ने शादी में कार्ड की जगह गमलों पर वर–वधू का नाम और कार्यक्रम स्थल लिखकर 400 लोगों को निमंत्रण भेजा। इन गमलों में विभिन्न किस्म के पौधे लगे हुए थे। इन्हें आठ महीने पहले लगाया गया था।

भोपाल के तुलसी नगर में रहने वाले राजकुमार कनकने के बेटे प्रांशु का विवाह 20 नवंबर को था। पहले परिवार ने सोचा की शादी के कार्ड बांटे जाएं। ऐसे में बड़े बेटे प्रतीक ने कहा कि क्यों न हम शादी के निमंत्रण में कुछ ऐसा करें, जिससे लोग पर्यावरण के प्रति जागरूक हों। परिवार ने निर्णय लिया कि 8 माह के पौधे लगे गमलों में वर–वधु और कार्यक्रम स्थल का नाम छपवाकर लोगों को निमंत्रित किया जाएगा। इसके लिए सभी के बीच सहमति भी बन गई।

लोगों को परिवार का खास पल यादगार रहेगा विचार यह भी था कि लोग कार्ड लेकर भूल जाते हैं, लेकिन यदि ये गमले उनके घरों में रहेंगे तो हमारे परिवार के इस खासपल को हमेशा याद रखेंगे। प्रतीक ने बताया कि हमने कार्ड नहीं छपवाए। भोपाल में परिचितों और रिश्तेदारों को 400 गमले देकर निमंत्रित किया। वहीं बाहर के रिश्तेदारों को वॉट्सएप कर शादी में आने का अनुरोध किया। यह प्रयोग काफी सफल रहा और लोगों ने इसे सराहा भी।

## हम चिड़ियों को दें दाना - पानी

गर्मी के इस मौसम में चारों ओर लू! और ताप का प्रकोप छाने लगा है। ऐसी स्थिति में बेजुबान पक्षियों/ चिड़ियों को भी भूख – प्यास के लिए भटकना पड़ता है। इसीलिए जिस प्रकार से हम अपने भोजन – पानी की व्यवस्था करते हैं। ठीक, उसी प्रकार से हमारा यह कर्त्तव्य होता है कि अपने घर, आंगन , छत, छज्जों और चबूतरों में मिट्टी के बर्तनों सकोरों में उनके लिए छांवदार स्थान पर पानी भरकर रख दें। और अनाज के दानें भी उनके लिए बिखेर दें। ऐसा करके हम सबसे बड़ा पुण्य कार्य करेंगे।

आइए हम सब इसके लिए संकल्पित हो जाएं। और हम स्वयं तो ऐसा करें ही, साथ ही अपने घर– परिवार, रिश्तेदारों को एवं मित्रों को भी चिड़ियों के लिए दाना – पानी का प्रबन्ध करने के लिए आग्रह करें।

आओ हम सब अपना कर्त्तव्य निभाएँ,
हम चिड़ियों को दें दाना – पानी।
परोपकार की रीति यही है,
हमको यही सिखाती आईं – दादी नानी।।

**–: पराक्रमी प्रताप :–**

वन्दन शत–शत बार तुझे हे बप्पारावल की संतान।
जय एकलिंग जय एक लिंग–हो जय जय हिन्दुस्थान।।ध्रु.।।

काया अग्नि तेज पुंज सा हिमगिरि सा हृदय विशाल,
वाणी तेरी सिंह गर्जना, थर्राता यवन श्रृगाल।
देश धर्म के अमर सेनानी, कैसे गाऊँ तब यश गान
यावत् चन्द्र दिवाकर तेरा, गायेगा यश हिन्दुस्थान।।

बप्पा–सांगा का पवित्र खून और ऋषियों का उदात्त विचार,
शौर्य–पराक्रम–आत्मतेज अरू ले धैर्य नूतन संचार।
भीष्म प्रतिज्ञा की थी तुमने तज दी सब संपदा महान
देश हितु तू वन–वन घूमे, राजर्षि ऋषि महान।।

चेतक बना ऐरावत तेरा तुम थे इन्द्र महान,
वज्र रूप निज भाले से ही ली तूने रिपु की जाने।
अकबर का सिर पुनः उठा है धरो निज तलवार कृपान,
मातृभूमि के लिये आज ही, कर लो अमर प्रयाण।।

अर्जुन साय जबलपुर

**प्रिय पाठक गण,**
**शाश्वत हिन्दू गर्जना पत्रिका के सम्बंध में अपने सुझाव एवं विचार कृप्या इस व्हाट्सएप नम्बर पर अपना पूर्ण परिचय, पता एवं पासपोर्ट साइज फोटो सहित प्रेषित करें।**
**सुशील बर्मन – 9981326887**

# बालाघाट में एनकाउंटर 28 लाख की इनामी दो महिला नक्सली ढेर

मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले में मुठभेड़ के दौरान पुलिस ने दो कुख्यात महिला नक्सलियों को मार गिराया है. इन दोनों नक्सली महिलाओं पर पुलिस ने 14–14 लाख रुपये का इनाम घोषित कर रखा था. दोनों के पास से हथियार, कारतूस व अन्य सामग्री बरामद हुई है. घटना की जानकारी होने के बाद बालाघाट पुलिस के सीनियर अधिकारी मौके पर पहुंचे और जायजा लिया।

मध्य प्रदेश का बालाघाट जिला काफी समय से नक्सली समस्या से जूझ रहा है. बालाघाट पुलिस ने बीते वर्ष 6 कुख्यात नक्सलियों को मार गिराया था. वहीं एक बार फिर दलम में एरिया कमांडर और गार्ड रही दो बड़ी महिला नक्सलियों को शूट कर दिया है. दोनों महिला नक्सलियों पर 14–14 लाख रुपये का इनाम घोषित था. बालाघाट पुलिस ने इसकी पुष्टि की है. पुलिस के साथ इन नक्सलियों की गढ़ी थाना क्षेत्र में मुठभेड़ हो गई थी.

पुलिस अधीक्षक समीर सौरभ ने बताया कि 22 अप्रैल की तड़के गढ़ी थाना अंतर्गत कदला के जंगल में हॉकफोर्स और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हो गई. इस दौरान जवानों ने 2 महिला नक्सलियों को मार गिराया है.

प्रेरक प्रसंग

## स्वदेशाभिमान

पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। उन्होंने गंधर्व महाविद्यालय की स्थापना की थी।1915 से वे प्रतिवर्ष कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में उपस्थित रहते थे और उन्होंने आरम्भ से वन्दे मातरम् गाने की प्रथा प्रस्थापित की थी।

1923 में आंध्र प्रदेश के काकीनाड़ा में कांग्रेस का अधिवेशन मौलाना मुहम्मद अली की अध्यक्षता में सम्पन्न हो रहा था। जब विष्णु दिगंबर पूर्व–परम्परा के अनुसार वन्दे मातरम् गाने के लिए खड़े हुए तो मौलाना साहब ने इस पर आपत्ति की और कहा कि उनके मजहब में गाना– बजाना मना है ।वहाँ उपस्थित गांधी जी तथा अन्य सभी नेता अचंभित हो गये। विष्णु दिगम्बर से रहा नहीं गया।उन्होंने दृढ़ता से प्रतिवाद किया।उन्होंने कहा– "यह एक राष्ट्रीय मंच है, मस्जिद नहीं जहाँ संगीत पर आपत्ति उठायी जाये।" अध्यक्ष महोदय अभी कुछ कह भी नहीं पाये थे कि उन्होंने वन्दे मातरम् गाना प्रारंभ कर दिया ।अध्यक्ष मुहम्मद अली अपने आसन से श्उठकर बाहर चले गये और पलुस्कर जी ने वन्दे मातरम् का गायन पूर्ण किया ।देशाभिमान तथा मातृभूमि के प्रति उनकी भक्ति ने उन्हें देशवासियों के आदर का पात्र बनाया।लोगों ने स्वदेशाभिमानी पलुस्कर जी के नैतिक साहस की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की ।

## बाल प्रश्नोत्तरी- 1

जीतें पुरस्कार बाल मित्रों मई का अंक पढ़ने के पश्चात निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर अपने उत्तर सीट में भरकर **8085119555** पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम शाश्वत हिन्दू गर्जना में प्रकाशित किये जाएगें तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरूस्कृत भी किया जायेगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल किशोर ही भाग ले सकते है। **उत्तर भेजने की अंतिम तिथि 25 मई 2023**

1. **महाराजा छत्रसाल का जन्म किस जिले में हुआ था?**
   (अ) पन्ना (ब) टीकमगढ़ (स) छतरपुर (द) सागर
2. **पहाड़ चीरकर नहर बनाने वाली बबिता राजपूत को कौन सा अवॉर्ड मिला था?**
   (अ) भारतरत्न (ब) पद्म भूषण (स) राष्ट्रीय वीरता (द) जल प्रहरी
3. **भगवान बुद्ध की जयंती कब मनाई जाती है?**
   (अ) बैशाख पूर्णिमा (ब) ज्येष्ठ त्रयोदशी(स) बैशाख अमावस्या (द) कार्तिक पूर्णिमा
4. **रीवा के किस आम को जी.आई. टैग मिला?**
   (अ) सुंदरजा (ब) हापुस (स) लंगड़ा (द) सिंधुरा
5. **हीट स्ट्रोक से किस मौसम में बचना चाहिए?**
   (अ) शीत ऋतु (ब) वर्षा ऋतु (स) ग्रीष्म ऋतु (द) शरद ऋतु
6. **राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने सतना के मझगवां में किसकी मूर्ति का अनावरण किया?**
   (अ) स्वामी डॉ.श्यामदेवाचार्य (ब) वीरांगना रानी दुर्गावती
   (स) रानी अवंतीबाई (द) रानी लक्ष्मीबाई
7. **जबलपुर का पूर्व बिशप जिसे करोड़ों की हेराफेरी तथा 99 अपराधिक मामलों में गिरफ्तार किया गया।**
   (अ) वेरियर एल्विन (ब) पी. सी. सिंह (स) कुंवर सिंह (द) मनीष गिडियन
8. **बालाघाट के किस थाना क्षेत्र के जंगल में पुलिस ने मुठभेड़ में दो महिला नक्सली को मार गिराया ?**
   (अ) गढ़ी (ब) बैहर (स) परसवाड़ा (द) लांजी
9. **कोटि कोटि जन्मों के बाद जिनका पुण्य संचित होता है, वो भी कदाचित् मनुष्य के रुप में भारत में जन्म लेता है। किसने कहा है ?**
   (अ)श्रीमन्त शंकरदेव भागवत (ब)मोहनराव भागवत (स)आद्यशंकराचार्य (द) रामानंदाचार्य
10. **दो जन्मों का कठोर कारावास अंग्रेजों ने किस क्रांतिकारी को दिया था ?**
    (अ) भगतसिंह (ब) स्वातंत्र्यवीर सावरकर (स) सुभाष चंद्र बोस (द) चन्द्रशेखर आजाद

**निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी-1)**

(कृपया अपनी पासपोर्ट साईज की फोटो भी व्हाट्सएप करें)

1.( ) 2.( ) 3.( )
4.( ) 5.( ) 6.( )
7.( ) 8.( ) 9.( )
10.( )

नाम.....

पिता का नाम.....

उम्र.....पूर्ण पता.....

.....

.....पिन.....

मोबाईल नं.....

## स्मरणीय दिवस मई 2023

- 04 मई – भगवान नरसिंह प्राकट्योत्सव
- 05 मई – भगवान बुद्ध जयंती
- 07 मई – नारद जयंती
- 22 मई – महाराजा छत्रसाल जयंती, महाराणा प्रताप जयंती, राजाराममोहन राय जयंती
- 23 मई – गुरू अर्जुनदेव पुण्यतिथि
- 28 मई – वीर सावरकर जयंती
- 31 मई – रानी अहिल्याबाई जयंती

## वर्ष प्रतिपदा नव वर्ष के पावन अवसर पर महाकौशल प्रांत के विभिन्न जिलों में सम्पन्न हुआ भव्य पथ संचलन

हम विजय की ओर बढ़ते जा रहे, संगठन का भाव भरते जा रहे।

# गोवंश के जीवन की रक्षा हेतु प्रदेश में जंगलों का आश्रय ही एक मात्र उपचार है

**" गायों का भोजन जंगल में और जंगल का आहार गायों के पास "**

इस प्राकृतिक समीकरण के आधार पर व्यापक कार्ययोजना बनें प्रदेश की नवनिर्मित गोशालायें आंशिक समाधान ही दे सकती हैं।

### मूक प्राणियों को प्रकृति के संसाधनों का आश्रय और मानवीय संवेदनाओं का सहारा चाहिये-

गोवंश किसी भी युग में अप्रासंगिक नहीं रहा उसकी प्रासंगिकता प्राचीन भारत में जितनी थी आज भी वह उतना प्रासंगिक है। देश की आर्थिक प्रगति और कृषिक उन्नति में गोवंश का अप्रतिम योगदान है।

### गोवंश का संरक्षण करना हम मनुष्यों का पुनीत दायित्व है -

गोवंश संरक्षण में "मैनपावर" और "मनीपावर" दोनों की जरूरत है गोसेवा केन्द्रों एवं गोशालाओं के संचालन में जनभागीदारी अतिमहत्वपूर्ण है।

गायों (गोवंश) के संरक्षण हेतु भारतवर्ष में प्रत्येक परिवार से चूल्हे की प्रथम रोटी गाय के हिस्से की होती है इसे ही हम गो-ग्रास कहते हैं, गो-ग्रास निकालने की पवित्र परम्परा को लुप्त और सुप्त नहीं होने देना है। मध्यप्रदेश गोसंवर्द्धन बोर्ड का यह पावन संकल्प और आमजनों को इसकी प्रेरणा भी है गो-ग्रास के निमित्त हम प्रतिदिन भोजन करने से पूर्व 10 रुपये अवश्य निकालें, यह गो-ग्रास का युगानुकूल नवाचार है। वर्ष में गोपाष्टमी के दिन 3650 रुपये गोसंवर्द्धन बोर्ड के पोर्टल में जमा करें।

www.gopalanboard.mp.gov.in

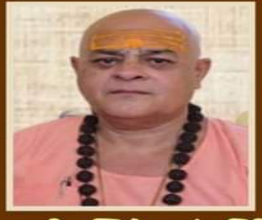

-स्वामी अखिलेश्वरानंद गिरि

# महाकौशल प्रांत में सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी का प्रवास

## वीरांगना रानी दुर्गावती अपनी वीरता के कारण कभी किसी से पराजित नहीं हुई- डॉ. मोहन भागवत

(मझगंवा, सतना में वीरांगना रानी दुर्गावती की प्रतिमा का अनावरण सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने किया)

इस अवसर पर डॉ. मोहन भागवत ने वीरांगना रानी दुर्गावती के कौशल को बताते हुए कहा कि वह प्रजाप्रिय एवं प्रजा की हितैषी तथा न्याय पालक थीं। उन्होंने विधवा होने के बाद व्यक्तिगत दुख में अपने को नहीं धकेला बल्कि अपनी प्रजा के कल्याण एवं प्रजा के हित में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। रानी दुर्गावती अपने लोगों द्वारा की गई किसी गलती के लिए उन्हें दंडित करने की पक्षधर नहीं बल्कि उसे क्षमा कर भूल सुधारने की हिमायती थी। वीरांगना रानी दुर्गावती अपनी वीरता के कारण कभी किसी से पराजित नहीं हुई बल्कि विश्वासघात की शिकार हुई। इससे सीख लेना चाहिए कि हम सभी राष्ट्र प्रेमीजनों का दायित्व होता है कि देश हित में कभी भी कोई विश्वासघात ना करने पाए।

डॉ. मोहन भागवत ने आगे कहा कि गोंडवाना रानी दुर्गावती का एक समृद्ध राज्य था। धन – धान्य से परिपूर्ण था। पति के बाद रानी दुर्गावती ने महिला के रूप में राज्य संभाल कर प्रजा को सुख, समृद्धि और सम्मान दिया। राज्य की आर्थिक समृद्धि का ध्यान रखा।

## भारत भविष्य की महाशक्ति - सरसंघचालक

जबलपुर में डॉ. श्यामदेवाचार्य जी की प्रतिमा अनावरण के अवसर पर डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि आज हम ही नहीं, पूरी दुनिया कह रही है कि भारत भविष्य की महाशक्ति है। भारत विश्वगुरु बनने जा रहा है और हमें वह लक्ष्य हासिल करना है। हम न किसी पर जीतेंगे और न किसी का धर्मांतरण करेंगे। हमारी शक्ति दूसरों को परेशान करने की नहीं, बल्कि कमजोरों की रक्षा करने की होगी। सरसंघचालक जी ने कहा कि हिंदू समाज को शिक्षित करने से पूरी दुनिया का भला होगा, लेकिन हमें समाज में फैली बुराइयों को मिटाना है।

## एक में सब, सब में एक - डॉ. मोहन भागवत

जबलपुर में सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने मानस भवन सभागार में समरसता व्याख्यानमाला को संबोधित किया। मोहन भागवत ने कहा कि संघ हिंदू समाज को संगठित करने का काम कर रहा है। धर्म समाज में पहले भेदभाव को दूर करने का काम करता हैं। कोई अपवित्र नहीं है, कोई ऊंचा नीचा नहीं है, सब सामान्य है। एक में सब है, सब में एक है। इस भावना से हमें आगे बढ़ना होगा। डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि गलती को ठीक करना है, गलती करने वाले को ठीक नहीं करना। जातिवाद, छुआछूत हजारों साल पुरानी बीमारी है। इस बीमारी से लड़ने के लिए बहुत सतर्क समझदारी से चलना होगा। जो लोग घर छोड़कर चले गए उनको भी हम वापस लाएंगे। समरसता के साथ भारत विश्व गुरु बनना चाहिए। संतों की कोई जाति नहीं होती अपना दायरा बढ़ाना होगा, तब समरसता होगी। यही राष्ट्रीय कर्तव्य है। जैसा बोलते हैं, वैसा करना पड़ेगा तब जाकर सामाजिक समरसता आएगी। सिर्फ लोगों का जमावड़ा सामाजिक समरसता नहीं है। सबकी सोच, लक्ष्य एक होना चाहिए। संतों की कोई जाति नहीं होती। इसलिए उनकी जयंती, समारोह में सभी जाति के लोग शामिल होना चाहिए।

प्रकाशक एवं मुद्रक
नरेन्द्र जैन द्वारा
विश्व संवाद केन्द्र महाकौशल न्यास,
के लिए ग्रेनेडियर्स एसोसिएशन प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर द्वारा
मुद्रित प्रकाशन स्थान विश्व संवाद केन्द्र,
प्लॉट नं. 1692, नव आदर्श कॉलोनी,
गढ़ा रोड, जबलपुर (मध्य प्रदेश ), पिन– 482002
दूरभाष 0761– 4006608,
संपादक – डॉ. किशन कछवाहा

प्रतिष्ठा में,